चतुर्थ अध्याय

''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष''

चतुर्थ अध्याय

''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष''

प्रस्तावना -

मध्यवर्ग आज समाज का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह वर्ग समाज में अपनी अलग पहचान बनाया हुआ है। यह पहचान उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्तर के अलगता के कारण है। मध्यवर्ग आज समाज में अपनी अलग संस्कृति एवं अलग सामाजिक परंपराएँ लिए हुए है। इस वर्ग की विवाह पद्धतियाँ एवं रीतियाँ, पारिवारिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, संस्कृति के प्रति अलग दृष्टिकोण ही समाज के उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग से अलग करते हैं। इस अध्याय के अंतर्गत हम विवेच्य उपन्यासों को आधार बनाकर मध्यवर्ग के सामाजिक पक्ष का एवं सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन करेंगे।

4.1 सामाजिक पक्ष -

व्यक्तिगत हित-संबंधों की पूर्ति के लिए समाज का निर्माण हुआ है। व्यक्ति और समाज दो अभिन्न अंग हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण सामाजिक नियम उसे धर्म रूढ़ि-परंपरा, विवाह, दांपत्य जीवन, पारिवारिक जीवन आदि की विरासत देते हैं। यहाँ हम नारी-पुरुष के विविध रूपों, जाति, रूढ़ि-परंपरा, विवाह, दांपत्य जीवन, पारिवारिक जीवन को आधार मानकर मध्यवर्गीय जीवन के सामाजिक पक्ष का अध्ययन करेंगे।

4.1.1 विवाह -

भारतीय संस्कृति में विवाह एक महत्त्वपूर्ण घटना है। मध्यवर्गीय समाज में इसका असाधारण महत्त्व होता है। मध्यवर्गीय माता-पिता अपने संतानों का विवाह ठीक समय पर करना चाहते हैं अगर ठीक समय पर विवाह नहीं हुआ तो लोग ऊँगली उठाते है। मध्यवर्गीय समाज में विवाह को परिवार का महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है। आधुनिक मध्यवर्ग में विवाह विषयक मान्यताओं में परिवर्तन दिखाई देता है। इस बदलाव के संदर्भ में डॉ. वीणा गौतम लिखती है-

"आज के युग-धर्म ने विवाह की परिभाषा बदलकर उसे अब धार्मिक बंधन के रूढ़ चौखटे से निकालकर पारस्परित समझौते के रूप में ढाल दिया है।"[1] आज मध्यवर्ग में विवाह एक समझौता हो गया है। परिणामस्वरूप प्रेम का अभाव, अपनत्व, सामंजस्य का अभाव दिखाई देता है और दांपत्य टूट जाते हैं। मध्यवर्ग में लड़के के विवाह से ज्यादा लड़की के विवाह की चिंता की जाती है। मध्यवर्ग में आज शिक्षा के विकास के कारण जाँति-पाँति के बंधन शीथिल हो गए हैं। आज मध्यवर्ग में प्रेम विवाह एवं आंतर्जातीय विवाह की मात्रा बढ़ गई है।

राजेंद्र यादव के 'शह और मात' उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार के सुजाता के माता-पिता, उसके विवाह की चिंता करते हैं। सुजाता की माँ विवाह को लेकर सुजाता को डाँटती है। सुजाता कहती है- "इतनी बड़ी तो हो गई। अब भी अक्का का यह नियंत्रण कभी-कभी झुंझलाहट पैदा कर देता है। एक तरफ तो मेरी जान खाती रहती है कि अब शादी कर ले, घर बसा ले। फिर कौन करेगा तेरी शादी ? फिर तो इतनी भी छूट नहीं देती कि आँखों से एक पल ओझल हो जाऊँ।"[2] स्पष्ट है मध्यवर्गीय माता-पिता लड़की के विवाह को लेकर अधिक सोचते हैं। आधुनिक शिक्षा तथा सामाजिक बंधनों के शिथिल हो जाने के कारण मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ विवाह देरी से करते हैं। उदय और सुजाता की भी स्थिति यही है। उदय पहले कुछ बनना चाहता है, पैसा कमाना चाहता है, परिवार की स्थिति में सुधार लाना चाहता है और बाद में खुद की गृहस्थी बसाना चाहता है। सुजाता भी उच्च शिक्षा लेकर आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनना चाहती है। देर से विवाह करने की पद्धति मध्यवर्गीय युवक-युवतियों में बढ़ने लगी है। इसके संदर्भ में डॉ. हेमराज निर्मम का कथन दृष्टव्य है- "मध्यवर्गीय युवतियाँ जिन कारणों से शीघ्र विवाह करती हैं, वे कारण भिन्न हैं। वे अच्छे साथी की प्रतिक्षा में या माँ-बाप की आर्थिक अवस्था को देखते हुए ऐसा करती हैं जबकि युवक विवाह को अपनी प्रगति में बाधा समझते हैं। वे सर्वप्रथम अपने पाँव पर खड़े होना चाहते हैं। उच्च-से-उच्च शिक्षा पूरी करना चाहते हैं। गृहस्थी के उत्तरदायित्व को उठाने से पूर्व देश तथा समाज अथवा परिवार के लिए कुछ-न-कुछ करना चाहते हैं।"[3] यही स्थिति 'शह और मात' में है। मध्यवर्गीय युवक-युवतियों में प्रेम-विवाह एवं आंतर्जातीय विवाह को प्रधानता मिल रही है। सुजाता तेज से प्रेम करती है, उससे विवाह करना चाहती है लेकिन तेज विदेश में जाकर विदेशी लड़की से विवाह करता है। उदय भी रश्मि से प्रेम-विवाह करना चाहता है

लेकिन उदय की आर्थिक दुरावस्था को देखकर रश्मि उसे छोड़ देती है। आज मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ अपने पसंद के अनुसार विवाह करना चाहती हैं, उसमें किसी की रूकावट वह सहन नहीं करती हैं। सुजाता की सहेली रेखा और उसका होनेवाला पति भागकर शादी करने का निर्णय लेते हैं क्योंकि लड़के के पिता को यह शादी मंजूर नहीं थी। राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय विवाह विषयक आधुनिक दष्टिकोण को 'शह और मात' में प्रस्तुत किया है।

मोहन राकेश जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखनेवाले रचनाकार हैं। उन्होने समय एवं कठिनाइयों से संघर्ष कर अपने जीवन को मजबूत बनाया है। 'अंधेरे बंद कमरे' में हरबंस और नीलिमा के प्रेम-विवाह का वर्णन है। उन दोनों ने जाति-पाति का विरोध कर प्रेम-विवाह किया है। शुक्ला और सुरजीत ने भी प्रेम-विवाह किया है। उनके भी जाति-पाति का संकेत उपन्यास में नहीं मिलता है। मोहन राकेश ने मध्यवर्गीय परिवारों में बढ़ती प्रेम-विवाह की प्रथा तथा उनके परिणामों को नीलिमा और हरबंस के माध्यम से व्यक्त किया है। नीलिमा घर के लोगों का विरोध कर हरबंस के साथ प्रेम-विवाह करती है लेकिन दोनों का प्रेम-विवाह अशांत एवं दुःख से भरा हुआ है। हरबंस का यह कथन- "मैं दुनिया का सबसे मूर्ख आदमी हूँ। न होता, तो कभी तुमसे ब्याह न करता।"[4] आज महानगरों में अनेक मध्यवर्गीय परिवारों में प्रेम-विवाह तो हुए हैं, लेकिन वह अंत तक टिक नहीं पाते हैं, बीच में टूट जाते हैं। 'अंधेरे बंद कमरे' में सुषमा श्रीवास्तव मध्यवर्गीय युवती है, वह देरी से विवाह करना चाहती है। उसके कारण हैं उसे सही साथी का इंतजार है तथा वह खुद को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। वह मानती है कि उसके नारी होने का कोई फायदा न उठाए। इसीलिए वह नौकरी के लिए पत्रकारिता जैसा सुरक्षित क्षेत्र चुनती है। आज मध्यवर्गीय युवतियाँ सुषमा की तरह खुद को सिद्ध करना चाहती हैं। पुरुषों के साथ कार्य करना चाहती हैं। समाज में पुरुषों की बराबरी करना चाहती है लेकिन सुषमा पुरुष से बराबरी करने तथा खुद को सिद्ध करने के प्रयास में थक जाती है, खुद को हारी हुई महसूस करती है। वह कहती है- "मैंने अपने को टूटने से बचाने के लिए काफी संघर्ष किया है। मगर अब ज्यादा संघर्ष मेरे बस का नहीं रहा।"[5] सुषमा भी हारकर शादी करना चाहती है, पुरुष के बंधनों में बंधना चाहती है। मोहन राकेश ने विवाह को मानवी जीवन के विकास को महत्त्वपूर्ण घटना माना है।

इसी वजह से 'अंधेरे बंद कमरे' की आधुनिक मध्यवर्गीय युवती सुषमा संघर्ष करके भी अंत में विवाह करना चाहती है।

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में जिस समाज का चित्रण हुआ है उसका स्वरूप आधुनिक मध्यवर्गीय है। इनके उपन्यासों का परिवेश, देहाती, शहरी तथा विदेशी भी है। निर्मल वर्मा का मध्यवर्ग आधुनिक होने के कारण वह विवाह संस्था को नकारता है। उनका मध्यवर्ग जात-पात नहीं मानता है। बिना शादी किए ही स्त्री-पुरुश एक-दूसरे के साथ रहते हैं, प्रेम करते हैं। उन्हें समाज का कोई बंधन नहीं रहता और वे अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। 'वे दिन' उपन्यास में भी रायना ने जाक से विवाह किया है लेकिन वह विवाह युद्ध के भय तथा डर के कारण एक शारीरिक समझौता था। इसी वजह से युद्ध खत्म होने पर रायना जाक के साथ रह नहीं पाती है। रायना उसे छोड़ देती है तथा अन्य पुरुषों से शारीरिक संबंध रखती है। रायना अनेक शहरों में घूमती है तथा अनेक पुरुषों से मुक्त यौनाचार करती है। शादी को वह अपने व्यक्तिगत स्वतंत्रता में दीवार मानती है।

मारिया और फ्रान्ज बिना शादी के बंधन को नकारते हैं। विदेश में जाने के लिए वीसा चाहिए या और वीसा के लिए मारिया को फ्रान्ज के साथ शादी करनी पड़ती है ? वह इस शादी का इन्कार करती है, फ्रान्ज भी इन्कार करता है। फ्रान्ज टी. टी. से कहता है- ''टी. टी... तुम कभी वीसा की शर्त पर विवाह कर सकते हो ? तुम क्या किसी भी शर्त को पूरा करने के लिए वह काम कर सकते हो, जो समय रहने पर तुम अपनी इच्छा से करना चाहोगे ?''[6] इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक मध्यवर्गीय व्यक्ति शारीरिक संबंध तो रखना चाहता है लेकिन उसी के साथ विवाह नहीं करना चाहता है। अतः मिर्नल वर्मा का आधुनिक मध्यवर्ग विवाह संस्था को नकारता है।

मन्नू भंडारी का प्रेम विवाह हुआ है। परिवार के अन्य सदस्यों का विरोध होकर भी उन्होने राजेंद्र यादव के साथ प्रेम विवाह किया है। उनका उपन्यास 'आपका बंटी' में भी प्रेम विवाह का चित्रण है। अजय और शकुन प्रेम-विवाह करते हैं। उनके विवाह के कुछ साल तो आनंद से भरे एवं सुखी बितते हैं लेकिन बाद में अजय और शकुन के अहं की भावना सामंजस्य का अभाव एवं प्रेम के अभाव के कारण अशांत एवं दुःख से भर जाता है। यह विवाह उनके लिए एक

अभिशाप बन जाता है। शकुन कहती है- ''दस वर्ष का यह विवाहित जीवन-एक अँधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था। आज जैसे एकाएक वह उसके अंतिम छोर पर आ गई है। पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेला दिए जाने की विवश कचोट-भर है। पर कैसा है यह छोर ? न प्रकाश न वह खुलापन, न मुक्ति का एहसास। लगता है जैसे इस सुरंग ने उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है- फिर और एक यात्रा, वैसा ही अंधकार, वैसा ही अकेलापन।''[7] शकुन और अजय एक-दूसरे को दोष देते हैं। आज मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन की यही प्रमुख समस्या है। दोनों अपने अहं को पोषित करने के लिए एक-दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं। हेमराज निर्मम मध्यवर्गीय दांपत्य विघटन के संदर्भ में लिखते हैं- ''मध्यवर्गीय समाज में दांपत्य जीवन में दुःख और कलह अधिक हैं। पति-पत्नी में एक-दूसरे को समझने का प्रयास कम है। एक-दूसरे की रुचियों के अनुसार स्वयं को कुछ सीमा तक बदलने का प्रयत्न है, अपने अधिकारों और दृष्टिकोण की ओर अधिक ध्यान देने के कारण शांति का अभाव है।''[8]

आज मध्यवर्गीय नारियाँ उच्च शिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बन रही हैं। वह पुरुष के अत्याचार एवं अन्याय को नहीं सहती हैं। शकुन भी आधुनिक मध्यवर्गीय नारी है। वह उच्च शिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है। अजय के अन्याय का विरोध करती है, उससे अलग हो जाती है। वह विवाह के खोखले बंधन को नकारती है। आज मध्यवर्गीय नारियाँ एवं पुरुष पुनर्विवाह का समर्थन कर रहे हैं। इसके संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते हैं- ''मध्यवर्गीय युवा दंपति में आपस में अनमेल, बेबनाव, तीसरे व्यक्ति का आगमन या स्वभावगत भिन्नता हो तो या तो पति दूसरा विवाह कर लेता है या पत्नी पति को छोड़कर दूसरा विवाह कर लेती है।''[9] अजय मीरा के साथ दूसरा विवाह करता है तो शकुन भी डॉ. जोशी के साथ पुनर्विवाह करती है। आज मध्यवर्ग में पुनर्विवाह की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है।

विवेच्य चारों उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवारों के विवाह संस्था से उठता विश्वास दिखाई देता है। मध्यवर्ग में प्रेम-विवाह, आंतर्जातीय विवाह, पुनर्विवाह की अधिकता पाई जाती है। आज मध्यवर्ग में युवक-युवतियाँ विवाह को एक समझौता तथा औपचारिकता के रूप में ले रहे हैं। विवाह के पीछे न प्रेमभाव होता है, न समर्पण, न विश्वास। मध्यवर्ग में शिक्षा का विकास होने से एवं पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से युवक युवतियाँ देरी से विवाह कर रहे हैं।

4.1.2 परिवार एवं दांपत्य जीवन -

मध्यवर्गीय सामाजिक पक्ष का अध्ययन करते समय मध्यवर्ग के पारिवारिक जीवन का विवेचन महत्त्वपूर्ण है। मध्यवर्गीय समाज के परिवार की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति क्या है ? उसका परिवेश किस प्रकार का है ? इसका ही अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय समाज की अपनी अलग पहचान है लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा तथा विज्ञान का प्रसार, औद्योगिकरण, देश की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन, नवीन दृष्टिकोण, वैयक्तिकता का विकास आदि के कारण संयुक्त परिवार का द्रुत गति से विघटन ही दिखाई नहीं देता तो दांपत्य जीवन भी विघटित हो रहे हैं। दांपत्य जीवन सुखी होने के लिए पति-पत्नी में सामंजस्य, मेल, संतुलन, सच्चा प्रेम, एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना का होना आवश्यक ही नहीं तो अनिवार्य है। इसके अभाव में दांपत्य जीवन दुःखी एवं अशांत बन जाता है।

'शह और मात' में संयुक्त परिवार का सिर्फ संकेत है। जैसे उच्च-मध्यवर्गीय अपर्णा के माता-पिता का परिवार एवं उसके पति का परिवार। यह संयुक्त परिवार भी हमें विघटित एवं टूटते हुए दिखाई देते हैं, इसका मूल कारण है उनके खोखले विचार एवं बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की वृत्ति। 'शह और मात' के अपर्णा का दांपत्य जीवन भी विघटित है इसका प्रमुख कारण है उसके पति का झूठा अहं भाव। खुद की कमजोरी छुपाने के लिए वह अपर्णा पर अत्याचार करता है। अपर्णा उसके अत्याचारों को ठुकराकर उसे छोड़ देती है और बंबई में आकर अकेली रहने लगती है। अपर्णा के दांपत्य टूटन का प्रमुख कारण है- पुरुषों का अहं, प्रेम एवं सामंजस्य का अभाव।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' में महानगरीय संयुक्त परिवार का चित्रण तो है लेकिन बहुत कम। उसके संयुक्त परिवार की आर्थिक दुरावस्था एवं बुरी हालत का संकेत है। मधुसूदन भी हमें अपने घर, गाँव एवं परिवेश से कटा हुआ पात्र दिखाई देता है। हरबंस भी अपने परिवार से कटा हुआ है। वह अपनी पत्नी नीलिमा के घर ही रहता है। हरबंस का पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन अशांत एवं टूटा हुआ है। इस विघटन की स्थिति के संदर्भ में पारूकांत देसाई लिखते हैं- ''मोहन राकेश द्वारा 'अंधेरे बंद कमरे' में पहली बार स्त्री-पुरुष के नए संबंधों और तनावों को भरपूर खुली आँखों से देखने की कोशिश की गई है। उसमें सांस्कृतिक विघटन बदलते बाह्य

परिवेश में स्त्री-पुरुष की मानसिकता की ढकी-छिपी रेखाएँ और कोण पहली बार उजागर हुए हैं।"[10] हरबंस और नीलिमा का दांपत्य जीवन उनके अहं, प्रेम के अभाव, आत्मसमर्पण के अभाव, विश्वास के अभाव के कारण अशांत बना हुआ है। अपने दांपत्य जीवन से छूटकारा पाने के लिए हरबंस और नीलिमा दोनों तड़पते हैं। नीलिमा कहती है- "हम लोगों की भलाई अब इसी में है कि हम एक-दूसरे से अलग रहें। अगर वह कानूनी तौर पर संबेध-विच्छेद करना चाहे, तो उसके लिए मेरी तरफ से कोई रुकावट नहीं होगी।"[11] दोनों का विवाह सिर्फ शारीरिक संबंधों पर टिका हुआ दिखाई देता है। दूसरी ओर दांपत्य जीवन में इतनी अनबन होकर भी टूटता नहीं है। शुक्ला और सूरजीत का दांपत्य जीवन सुखी बितता हुआ दिखाई देता है। मोहन राकेश ने 'अधरे बंद कमरे' उपन्यास में पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन के विघटन को प्रस्तुत कर उनकी समस्याओं को हमारे सामने रखा है।

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में संयुक्त परिवार एक भी दृष्टिगत नहीं होता है। इनके पात्रों का पारिवारिक जीवन अलग ही है। इनके आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार में भय, निराशा एवं अतृप्ति छायी है। 'वे दिन' उपन्यास में भी पात्र परिवार से कटे हुए दिखाई देते हैं। 'वे दिन' का नायक मैं तथा उपन्यास के अन्य पात्र अपने घर से कटे हुए दिखाई देते हैं, जो व्यक्ति बचपन से ही घर के बाहर रहते हैं, जिन्हें कभी घर की सुविधा या घर के लोगों के संबंधों को उष्मा नहीं मिली होती, वे गृहवितृष्णा के शिकार हो जाते हैं। 'वे दिन' की रायना, इंदी, फ्रान्ज, मारिया, टी. टी. आदि गृह-वितृष्णा के शिकार पात्र हैं। मैं का यह कथन इस बात का प्रमाण है- "कभी-कभी पीते समय हम अपने-अपने घरों की बातें करते थे, लेकिन तब भी हम उसके प्रति नॉर्मल दृष्टिकोण नहीं रख पाते थे। हम ऐसे वर्षों में घर को छोड़कर चले आए थे जब बचपन का संबंध उससे छूट जाता है और बड़प्पन का नया रिश्ता जुड़ नहीं पाता। अब घर बहुत अवास्तविक-सा जान पड़ता था, जैसे वह किसी दूसरे की चीज हो, दूसरे की स्मृति।"[12] पारिवारिक विघटन की यह क्रिया हमारे देश में बहुत ही तेजी से हो रही है।

'वे दिन' उपन्यास में दांपत्य जीवन भी विघटित है। रायना द्वितीय महायुद्ध के अभिशाप का शिकार हो जाती है। रायना आज भी उन कॉन्स्ट्रेक्शन कैंप की याद से डरती है और उसी वजह से अपने पति से अलग हो जाती है। रायना और जाक अब कभी-कभी एक दूसरे से

मिलते हैं। रायना और जाक में समर्पण की भावना के अभाव के कारण एक-दूसरे से मिलते हैं। रायना और जाक में समर्पण की भावना के अभाव के कारण एक-दूसरे के प्रति प्रेम का अभाव, अविश्वास, आकर्षण और भय अधिक है। यही दांपत्य जीवन में विघटन और तनाव के कारण हैं।

'आपका बंटी उपन्यास में एकल परिवार ही दिखाई देता है, संयुक्त परिवार नहीं। जो एकल परिवार है वह भी विघटित एवं संघर्ष से भरे हुए है। इसमें पिड़ित दांपत्य जीवन टूटा हुआ दिखाई देता है। अजय और शकुन उच्च शिक्षित दांपत्य हैं। दोनों का प्रेम हुआ है लेकिन दोनों के अहं एवं तालमेल के अभाव के कारण अलग-अलग रहते हैं। अजय ने मीरा के साथ दूसरी शादी कर ली है और शकुन भी अजय को तलाक देकर डॉ. जोशी के साथ पुनर्विवाह कर लेती है। अजय और शकुन तलाक लेते हैं लेकिन उनका पुत्र बंटी इनके संघर्ष में पीसता उपेक्षित जीवन जीता है। आधुनिक मध्यवर्गीय दांपत्य में आज तलाक की संख्या बढ़ रही है। महानगरों में तो मध्यवर्गीय परिवारों में आए दिन झगड़ा एवं तलाक हो रहे हैं। स्वभावगत भिन्नता एवं प्रेम के अभाव के कारण मध्यवर्गीय दांपत्यों का जीवन जहरीला बनता जा रहा है।

अतः चारों उपन्यासों में हमें संयुक्त परिवारों का कम चित्रण है तथा एकल परिवारों का भी चित्रण मिलता है। सभी मध्यवर्गीय परिवार आज विघटन की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। पारिवारिक विघटन की तरह इन उपन्यासों में दांपत्य जीवन विघटित एवं टूटने की प्रक्रिया से गुजरता हुआ दिखाई देता है। दांपत्य जीवन अशांतता का प्रमुख कारण हमें आधुनिक शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री-पुरुषों का अहं और सामंजस्य, प्रेम, विश्वास तथा अपनत्व का अभाव दिखाई देता है। दांपत्य जीवन के बिखराव का दूषित परिणाम आज मध्यवर्गीय समाज, परिवार एवं बालकों पर होता दिखाई देता है।

4.1.3 नारी जीवन -

भारतीय नारी प्राचीन काल से ही पुरुषों के अत्याचारों द्वारा शोषित एवं समाज के द्वारा प्रताड़ित रही है। नारी समाज के विकास का मूल अधार रही है। आज आधुनिक शिक्षा के विकास के कारण नारी को अपने अधिकारों के प्रति सजग किया है। वह आज बंधनों एवं भारतीय नारी के आदर्शों को स्वीकार नहीं करती है। वह अपनी इच्छा से जीवन यापन करना चाहती है। आधुनिक मध्यवर्गीय नारियों के संदर्भ में राधा गिरधारी लिखती हैं- "शिक्षा के प्रभाव से

मध्यवर्गीय नारी अपनी मर्यादाओं को लेकर चलती है। पर कई बार शिक्षा के प्रभाव के कारण ही वह स्वातंत्र्य का अर्थ स्वैराचार समझती है। परिणामतः उसके पथभ्रष्ट होने की पूरी संभावना रहती है। यह पथभ्रष्टता कई बार चारित्रिक होती है तो कई बार पारस्परिक आदर्शों को मान्यता न देने से।''[13] आज मध्यवर्गीय नारियाँ विद्रोह की भूमिका में हैं। वह सभी संस्कारों, रूढ़ियों, रीतियों का विरोध करती है जिससे उनका फायदा कम नुकसान ही ज्यादा होता है।

'शह और मात' उपन्यास में राजेंद्र यादव ने आधुनिक मध्यवर्गीय नारियों का चित्रण किया है। 'शह और मात' में सुजाता, रेखा, अपर्णा आधुनिक नारियाँ हैं। सुजाता उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है। वह जीवन के निर्णय खुद लेती है। वह अपने दोस्तों के साथ घूमती है, उन्हें घर लाती है। सुजाता लड़कों के साथ दोस्ती करने से कतराती नहीं है। वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनना चाहती है। अपर्णा भी अपने पति के अत्याचारों का विरोध कर बंबई में आकर अकेली रहती है। अपर्णा अपना जीवन उच्च-मध्यवर्गीय परिवारों में बिताती है। राजेंद्र यादव ने उच्च-मध्यवर्गीय परिवारों में पुरुषों के झूठे अहं का शिकार होती नारी का अंकन अपर्णा के माध्यम से किया है। अपर्णा का पति अपर्णा को पीटता है। सुजाता खुद को स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली कहती है लेकिन उसे भी पूरी स्वतंत्रता नहीं मिलती है। आज के देहाती मध्यवर्गीय नारियों या युवतियों के संदर्भ में सुजाता उदय से कहती है- ''बात यह है कि अभी तक तो हम रहे यू. पी. में। वहाँ जैसी निगरानी और वातावरण का जो स्वरूप है, उसे तो आप जानते ही हैं। वहाँ तो लड़की होना ही मानो पाप है। यही एक अपराध-भावना छाती, पर वहाँ हर वक्त छाई रहती है कि हम लड़की है; परिचय या सम्पर्क की बात ही नहीं उठती।''[14] इस कथन से स्पष्ट होता है कि आज हम कितना भी कहे की नारी स्वतंत्र हो गई है उस पर होनेवाले अत्याचार कम हो गए हैं लेकिन आज भी हमारे देश में अपर्णा जैसी औरतें दिखाई देती हैं। राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय नारी की अर्ध-स्वतंत्रता को 'शह और मात' उपन्यास में चित्रित किया है तो दूसरी ओर नारी के विकास की ओर भी संकेत किया है।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में आधुनिक मध्यवर्गीय नारी का चित्रण किया है, जो उच्च शिक्षित है। वह अपने अधिकारों एवं अस्तित्व के प्रति सजग है। उपन्यास में नीलिमा, शुक्ला एवं सुषमा आधुनिक नारियाँ हैं। सभी उपशिक्षित हैं। वह अपने जीवन के निर्णय

... KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

खुद लेती है। नीलिमा तथा शुक्ला अपने विवाह के निर्णय खुद लेती है और अपने पसंद के पुरुष के साथ प्रेम-विवाह करती है। नीलिमा में हमें अहं की भावना, द्वंद्व, उन्मुक्तता, स्वच्छंद वृति दिखाई देती है। नीलिमा अपने पति हरबंस के अत्याचार एवं रोष को नहीं सहती है। वह उसका विरोध करती है। वह शराब सिगरेट पीती है। अन्य पुरुषों के साथ घूमने जाती है। मोहन राकेश ने नीलिमा के मध्यवर्गीय परिवार के नारियों की दिशाहीनता तथा अंधी आधुनिकता को स्पष्ट किया है। उपन्यासों में सुषमा श्रीवास्तव आधुनिक नारी है। उच्च शिक्षित, नौकरी करनेवाली, आर्थिक आत्मनिर्भर है। वह पुरुषों के साथ उनके बराबर काम करती है। वह मध्यवर्गीय युवती या नारी के संदर्भ में कहती है- ''मैं पहले इस बात का बहुत पक्षपात करती रही हूँ कि एक लड़की को बिल्कुल स्वतंत्र जीवन बिताना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के साथ बंधकर उसके शासन में रहना मुझे बहुत गलत लगता था और तुम जानते हो कि हर पुरुष किसी-न-किनसी रूप में स्त्री पर शासन करना चाहता है।''[15] सुषमा के उक्त कथन से मध्यवर्गीय नारी विचार दृष्टि स्पष्ट होती है। वह स्त्री-पुरुष के पक्षपात को मीटाने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की, खुद को पुरुषों के बराबर सिद्ध किया है। मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी की दिशाहीनता एवं आधुनिकता, टूटन को व्यक्त किया है।

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में आधुनिक नारी के विविध रूप दिखाई देते हैं। स्वच्छंद जीवन जीनेवाली नारी, प्रेमिका के रूप में नारी, आधुनिक नारी का विधवा रूप, प्रेम में असफल नारी, नारी का वेश्या रूप, बहन रूप, विवाह उपरांत पुरुष से संबंध, पारिवारिक समस्याओं से जुझती नारी, उन्मुक्त भोग लेनेवाली नारी, विवाहपूर्व शारीरिक संबंध रखनेवाली नारी, भयग्रस्त नारी, विवाह संस्था को न माननेवाली नारी आदि विभिन्न रूपों का चित्रण निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में मिलता है।

निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास में भी स्वच्छंदी उन्मुक्त भोग लेनेवाली, विवाह उपरांत एवं पूर्व संबंध रखनेवाली, स्वतंत्र व्यक्तित्व रखनेवाली नारी दिखाई देती है। उपन्यास की नायिका रायना आधुनिक नारी है। वह अपने पति से रिश्ता तोड़ देती है। वह पति के बंधनों में रहना पसंद नहीं करती है। अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखना चाहती है। वह अपने मर्जी के अनुसार अनेक शहरों में घूमती है। उन्मुक्त भोग को रायना अपने जीवन में प्रधानता देती है। विवाह होने

पर भी वह जहाँ-जहाँ घूमने जाती है, वहाँ-वहाँ अन्य पुरुषों से शारीरिक संबंध रखती है। रायना का मैं से कहा यह कथन- "मैं ज्यादा दिन अकेली नहीं रह सकती...।"[16] रायना की भोग वृत्ति को स्पष्ट करता है। वह मैं के साथ शहर में घूमती है, उसे चूमती है उसे उसमें कोई अनैतिक नहीं लगता है। 'वे दिन' में मारिया जो विवाह के पूर्व प्रेम-संबंध रखती है। फ्रान्ज के साथ शारीरिक संबंध रखती है लेकिन विवाह करना जरूरी नहीं समझती है। टी. टी. की माँ दूसरी शादी करती है। अतः निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में काम तृप्ति से पीड़ित रायना द्वारा आधुनिक मध्यवगीय नारी का चित्रण किया है। उन्होने नारी को पुरुष के समान उन्मुक्त भोग लेते हुए तथा स्वतंत्र जीवन बिताते हुए दिखाया है।

मन्नू भंडारी ने 'आप का बंटी' में उच्च शिक्षित एवं अपने अस्तित्व के प्रति सजग नारी का चित्रण शकुन के द्वारा किया है। शकुन उच्च शिक्षित है। वह कॉलेज में प्रिंसिपल है। आर्थिक दृष्टि से पूर्ण रूप से स्वावलंबी है। शकुन अपने अस्तित्व एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लेकर सजग रहती है। उसे अजय जब बंधनों में रखना चाहता है तब उसका विरोध करती है। शकुन अपने जीवन के निर्णय खुद लेती है। वह अजय के अत्याचार के कारण उसे छोड़ देती है। उससे तलाक लेती है। वह दूसरा विवाह करने का निर्णय लेती है और डॉ. जोशी के साथ विवाह करती है। वह इसके लिए समाज या अजय की पर्वा नहीं करती है। मन्नू भंडारी शकुन के व्यक्तित्व के संदर्भ में लिखती हैं- "शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने-आपको स्वाहा कर देनेवाली माँ नहीं थी; बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से दृप्त माँ थी।"[17] स्पष्ट है आज मध्यवर्गीय नारियाँ पुरुषों के बंधनों को नकारती हैं। वह ऐसे विवाह को नहीं मानती हैं जिसमे उन्हें सम्मान एवं आदर नहीं मिलता है। आज मध्यवर्गीय नारियाँ सभी कार्यों में सहयोग देना चाहती हैं। पुरुषों के शोषण या रोष को वह नहीं सहती हैं। पति अन्याय करने पर उससे अलग होती हैं तथा अपने जीवन के संदर्भ में खुद निर्णय लेती हैं।

अतः चारों विवेच्य उपन्यासों मे आधुनिक मध्यवर्गीय नारियों का चित्रण किया है। आज मध्यवर्गीय नारी उच्च शिक्षा ले रही है। वह अपने अस्तित्व एवं व्यक्ति स्वतंत्रता के प्रति सजग दिखाई देती है। 'स्व' की अति सजगता एवं पुरुषों के बराबर सिद्ध करने की ईर्ष्या ने आज मध्यवर्गीय नारियों में एक ओर अहं को भर दिया है तो दूसरी ओर अपने मार्ग से भटककर नैतिकता

को खो रही है। आधुनिक शिक्षा ने मध्यवर्गीय नारियों को शोषण का प्रतिकार करने की शक्ति एवं विकास का दृष्टिकोण भी दिया है। आज मध्यवर्गीय नारियाँ उच्च वर्ग एवं पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षित हैं। वह ऊँची अकांक्षाएँ लेकर जीन जीना चाहती हैं और अकांक्षाएँ पूरी न होने पर परिवार समाज में विद्रोह करके खूद के जीवन के साथ पूरे परिवार का जीवन अशांत बना देती हैं। अतः चारों उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय नारी के जीवन चित्रण के साथ उनकी समस्याओं को वाणी देने का रचनाकारों का प्रयास सफल रहा है।

4.1.4 उच्चवर्ग एवं पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षण -

अनुकरण मानव का मूल धर्म है। अनुकरण से आदमी सीखता है, बढ़ता है, खुद का विकास करता है। मानव भाषा, वेशभूषा, विचार एवं संस्कृति का अनुकरण करता है। अनुकरण अगर सही दिशा में हो तो मानव का विकास होता है लेकिन गलत दिशा में अनुकरण होने पर व्यक्ति, देश एवं समाज की हानि होती है। आधुनिक युग में मानव एक-दूसरे के कार्य, विचार एवं संस्कृति से अधिक प्रभावित है। इसका प्रमुख प्रमाण है उसके विचारों, शिक्षा एवं आदतों का विकास है।

समाज के सभी वर्ग एक-दूसरे का अनुकरण करते हैं लेकिन मध्यवर्ग शिक्षित होने के कारण सभी कार्य एवं घटनाओं के प्रति सचेत एवं सजग होता है। आज भारतीय मध्यवर्ग पश्चिमी समस्याओं, संस्कृति, विचार, वेशभूषा के प्रति सबसे अधिक आकर्षित है। वह पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण कर रहा है। उच्चवर्ग की शानो-शौकत, रहन-सहन, वेशभूषा, आर्थिक स्थिति को देखकर खुद भी उनके जैसा जीवन जीना चाहता है। अनेक अकांक्षाओं एवं इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो रहा है। इस कारण मध्यवर्गीय व्यक्ति एक ओर सबसे अधिक ईमानदार होता है क्योंकि सभी स्थितियों एवं परिवेश के प्रति चेतना परक दृष्टि रखता है, तो दूसरी ओर सबसे अधिक स्वार्थी, लालची, भ्रष्टाचारी एवं धन के प्रति आकर्षित दिखाई देता है क्योंकि वह स्थितियों का फायदा उठाकर जल्द-से-जल्द अमीर बनना चाहता है। पश्चिमी सभ्यता एवं उच्च वर्ग के आकर्षण के कारण मध्यवर्गीय व्यक्तियों में मानसिक तनाव अशांतता एवं अस्तित्ववादी दृष्टिकोण दिखाई देता है।

'शह और मात' उपन्यास में भी सुजाता जो मध्यवर्गीय है वह अपर्णा के जीवन स्तर एवं उसके सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षित है। उदय भी खुद के विकास एवं परिवार के विकास के लिए शहर की चकाचौंध से आकर्षित हो जाता है। सुजाता और उदय पश्चिमी सभ्यता का भारतीय विज्ञापनों और भारतीय स्त्री-पुरुषों पर हो रहे बुरे असर पर चर्चा करते हैं। पश्चिमी सभ्यता के संदर्भ में उदय एक रूसी का कथन बताता है- ''पुरुषों को अधिक-से-अधिक कपड़ों से लादने और स्त्री को अधिक-से-अधिक नंगा करने की सभ्यता है।''[18] पश्चिमी सभ्यता के कारण महानगरीय मध्यवर्गीय व्यक्ति एवं नारियाँ फॅशन के नाम पर अंग प्रदर्शन कर रही हैं। शरीर को दिखाकर या बेचकर अमीर बन रही हैं।

'अंधेरे बंद कमरे' नीलिमा, हरबंस, शुक्ला, मधुसूदन, सुरजीत आदि पात्र पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति आकर्षित हैं। नीलिमा हर दिन कॉफी हाऊसों में, होटलों में जाती है, अपने बालों को कटवाती है। उच्च स्तर का जीवन जीना चाहती है। वह शराब एवं सिगार पीती है। वह मधुसूदन से कहती है- ''तुम्हें मेरा सिगरेट पीना बुरा तो नहीं लग रहा ? बुरा लग रहा हो, तो बुझा दूँ। मैं घर में कभी कभार एकाध सिगरेट पी लेती हूँ। हरबंस ने मेरी आदतें बहुत बिगाड़ रखी हैं।''[19] उक्त कथन मध्यवर्गीय नारी की दिशाहीनता एवं पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव को स्पष्ट करता है। पाश्चात्य या यूरोप में सभी नारियाँ शराब एवं सिगार का सहारा लेती हैं। उनके जीवन का आधा समय नशा करने में तथा घूमने में जाता है। नीलिमा में भी यह गुण दिखाई देते हैं। वह पार्टियों में जाती है ? विदेशों में घूमती है, होटलों में रहती है। शुक्ला भी सुरजीत के दिखावे के प्रति आकर्षित हो जाती है और उससे विवाह करती है। सुषमा आधुनिक युवती है। उसे उच्चवर्गीय रहन-सहन, वेशभूषा तथा संस्कृति आकर्षित करती है। वह राजनेताओं, धनी लोगों के संपर्क में रहने के कारण समाज में चर्चा का विषय होती है। हरबंस को भी विदेश में जाना अच्छा लगता है। वह पढ़ाई के लिए याने पीएच्. डी. का थिसिस बनाने के लिए विदेश जाता है। मोहन राकेश ने नीलिमा तथा सुषमा के द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण दिशाहीन होती नारियों का चित्रण किया है। हरबंस के द्वारा आज मध्यवर्ग विदेश में जाता तो है लेकिन वहाँ उसकी हालत बुरी हो जाती है। उसे अनेक समस्याओं का सामना वहाँ करना पड़ता है।

निर्मल वर्मा का 'वे दिन' उपन्यास पूरा पश्चिमी सभ्यता पर आधारित है। उसका पूरा परिवेश अभारतीय है। ऑस्टेलिया के प्राग शहर की कथा उसके सांस्कृतिक वातावरण के साथ प्रस्तुत है। उसमें जो कथानक है इंदी वह सिर्फ भारतीय है। आज भारतीय उच्च मध्यवर्गीय परिवारों में अपने संतानों को विदेश में शिक्षा देने की आकांक्षा बढ़ने लगी है। मैं (इंदी) भी मेडिकल की शिक्षा पाने के लिए विदेश में गया है लेकिन वहाँ के सभ्यता के रंग में रंगकर वह भारत वापस नहीं लौटना चाहता है। यही आज के मध्यवर्गीय युवकों में दिखाई देता है। जो शिक्षा के नाम पर विदेश में जाते हैं लेकिन अपने देश, समाज एवं परिवार के प्रति जो कर्तव्य है उन्हें भूलकर वहीं बस जाते हैं।

'आपका बंटी' में शकुन मध्यवर्गीय नारी है। वह डॉ. जोशी के उच्चवर्गीय रहन-सहन, वेशभूषा से प्रभावित है। डॉ. जोशी के रहन-सहन एवं घर के प्रति वह आकर्षित हो जाती है। वह हर पंधरा दिनों में अपने बालों को कटवाती है। कॉलेज जाते समय दर्पण के सामने बैठकर घंटों मेकप करवाती है। अच्छी एवं महँगी साड़ियाँ पहनती है। डॉ. जोशी ने उसे भेट में दिया विदेशी 'परफ्युम' तो बहुत ही प्यारा लगता है। सेंट की बोतल टूट जाने पर वह अमि एवं बंटी को पीटती है और नाराज हो जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि मध्यवर्गीय नारियाँ आज उच्चवर्गीय जीवन एवं पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध से सबसे अधिक प्रभावित हैं।

अतः 'शह और मात', 'अंधरे बंद कमरे', 'वे दिन' और 'आपका बंटी' उपन्यासों के मध्यवर्गीय पात्र उच्चवर्गीय आकांक्षाओं एवं पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित जीवन बीताते हैं। इन आकांक्षाओं एवं अंधानुकरण के कारण मध्यवर्गीय समाज दिशाहीन हो रहा है। आधुनिक सभ्यता एवं उच्चवर्गीय संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित मध्यवर्गीय नारी दिखाई देती है। आज समाज में पाश्चात्य संस्कृति के परिणामस्वरूप प्रेम, संवेदना, मानवता जैसे मूल्य विघटित हो रहे हैं। महानगरों की फ्लॅट संस्कृति इसी का एक उदाहरण है।

4.1.5 रीति-रिवाज, रूढ़ि परंपरा की जड़ता -

आज विज्ञान एवं शिक्षा के विकास के कारण पूरे विश्व में परिवर्तन आ गया है। आधुनिकीकरण, औद्योगिकीरण, नागरीकरण ने सामाज की दिशा एवं गति में अमूलाग्र परिवर्तन किया है लेकिन मध्यवर्गीय समाज आज रूढ़ि-परंपराओं, रीति-रिवाजों से इतना चिपक गया है कि

वे स्थिति के अनुकूल हो या प्रतिकूल, वह उन्हें छोड़ नहीं सकता। इस संदर्भ में डॉ. राधा गिरधारी लिखती है- ''मध्यवर्गीय वर्ग रूढ़ियों में जकड़े हुए होने के कारण अपनी प्रगति नहीं कर पाता। परंपरावादी होने के कारण ऊँच-नीच, अच्छी, बुरी, नैतिक-अनैतिक जैसी अनेक भावनाएँ इस वर्ग को आज भी अपने जाल में फँसाए हुए है। आर्थिक अभाव से त्रस्त यह वर्ग संघर्ष कर रहा है।''[20] मध्यवर्ग आज विद्रोही बन रहा है लकिन फिर भी उनमें विवाह, परिवार, संस्कार विषय के कुछ रूढ़ियाँ आज भी प्रचलित हैं।

'शह और मात' उपन्यास में सुजाता का परिवार भी रूढ़ि-परंपराओं से जकड़ा हुआ है। सुजाता को घर में दिन डूबने से पहले आना पड़ता है। सुजाता मध्यवर्गीय परिवारों, रूढ़िगत विचारों के संदर्भ में अपर्णा से कहती है- ''आप अभी निम्न मध्यवर्गीय परिवारों की हालत नहीं जानतीं। दिन छिपे के बाद लड़की को कहीं देर हो जाए तो मुसीबत हो जाती है, दिन में तो जहाँ चाहे चलिए।''[21] सुजाता की माँ, पिताजी, फूफी उसे डाँटते हैं। सुजाता के पिता डॉक्टर हैं। आधुनिक विचारों का परिवार है फिर भी वह सुजाता के लड़कों के साथ घूमने फिरने के विरोध में है। उसकी दूर की रिश्तेदार तो उसे फूहड़ बिगड़ी हुई कहती है, रेखा उसे संभल जाने का संदेश देती है।

आज मध्यवर्गीय समाज पुराने रीति-रिवाजों को पूरी तरह से छोड़ देना चाहता है। मध्यवर्गीय नारी तो पूरी तरह से छोड़ देना चाहती है। मध्यवर्गीय नारी तो पूरी तरह विद्रोह करना चाहती है। सुजाता इन सब रूढ़ परंपराओं, बंधनों की खिल्ली उड़ाती है। सुजाता भी यह नम्रता, शालीनता का जोड़ा उतार फेंक देना चाहती है लेकिन विवशता से आबद्ध होने के कारण रूढ़ियों में जकड़न में उसे रहना पड़ता है। इसी वजह से वह उदय के कमरे में अकेले बैठने पर डरती है। उदय को घर को आने का आमंत्रण देने पर पापा की नारजगी का डर उसे परेशान करता है। राजेंद्र यादव के विचारों के संदर्भ में और रचना विषयवस्तु के संदर्भ में डॉ. राधा गिरधारी लिखती हैं- ''राजेंद्र यादव रूढ़िवादी विचारधारा के लेखक नहीं माने जा सकते, परंपराओं के प्रति गहरी अरुचि उपन्यासों के पात्रों में स्पष्ट रूप से झलकती है। प्राचीन मान्यताओं और रूढ़ियों के प्रति अलगाव उनके उपन्यासों में झलकता है।''[22] 'शह और मात' के पात्रों की रूढ़ि परंपराओं का विरोध करते दिखाई देते हैं।

मोहन राकेश खुद अनास्थावादी हैं। वह खुद के कार्यक्षमता एवं जीवन संघर्ष को महत्त्व देनेवाले रचनाकार हैं। समाज मे फैली रूढ़ि परंपराओं का विरोध अपने वास्तविक जीवन में तो किया ही लेकिन अपने रचनाओं के द्वारा भी सामाजिक बुराइयों के विरोध में आवाज उठायी। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में भी सभी पात्र रूढ़ियों के प्रति अनास्थावादी दिखाई देते हैं। नीलिमा रीति-रिवाजों का विरोध कर हरबंस से प्रेम-विवाह करती है। शुक्ला भी सुरजीत के साथ प्रेम-विवाह करती है। नीलिमा को हरबंस के खोखले विचारों एवं रूढ़िवादी वृत्ति से चीड़ है। हरबंस उसे घर में रखना चाहता है लेकिन नीलिमा उसका विरोध करती है। वह घर के बाहर निकलकर नृत्य का प्रशिक्षण लेती है। विदेश में जाकर नृत्य का प्रदर्शन करती है। हरबंस के विचार मध्यवर्गीय पुरुषों के रूढ़िवादी मानसिकता के प्रतीक हैं। वह भारतीय परंपरा के अनुसार अपनी पत्नी नीलिमा से घर के काम करवाना चाहता है, उसे अपने रोब में रखना चाहता है लेकिन नीलिमा इन सबका विरोध करती है। वह होटलों में जाती है, सिगरेट एवं शराब पीती है, पार्टियों में जाती है। सुषमा भी परंपराओं का विरोध कर शहरों में रहती है, नौकरी करती है। भारतीय परंपराओं के अनुसार लड़कियों का विवाह जल्दी किया जाता है लेकिन सुषमा इस परंपरा का विरोध करती है। वह पहले खुद को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है, पुरुषों के बराबर सिद्‌ध करना चाहती है और बाद में शादी करना चाहती है। भारतीय संस्कृति में विवाह संस्था को महत्त्वपूर्ण स्थान है लेकिन नीलिमा उस विवाह को ढकोसला या खोखला मानती है जिसमें पति-पत्नी में विश्वास, प्रेम, सामंजस्य नहीं है। इस रूढ़िवादी परिवार एवं विवाह संस्था को वह नकारती है। अतः मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' में रूढ़ि परंपराओं एवं रीति-रवाजों को पात्रों द्वारा तोड़ते हुए दिखाया है। आज मध्यवर्गीय व्यक्ति आधुनिक विचारों के कारण जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण तैयार करना चाहते हैं।

'वे दिन' उपन्यास में रूढ़ि-परंपराओं एवं अंधविश्वासों का ज्यादा चित्रण नहीं है क्योंकि उसमें चित्रित मध्यवर्ग विदेशी मध्यवर्ग है। फिर भी हमें इंदी और रायना के तीली घटना द्‌वारा विदेशों में भी अंधविश्वास दिखाई देता है जिसे मैं कहता है- ''मुझे अब तुम्हें चूमना होगा। 'मैं' ने कहा। क्यों ? उसने कौतूहल से मेरी ओर देखा। यहाँ यही प्रथा है। अगर कोई लड़की

अपनी इच्छा से जलती हुई तीली बुझा दे, तब उसका मतलब यही होता है।''[23] इससे स्पष्ट होता है कि विदेशी मध्यवर्ग में भी रूढ़ि-परंपरा एवं अंधविश्वास दिखाई देता है।

'आपका बंटी' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्ग का चित्रण होने के कारण इसमें रूढ़, परंपराओं की जड़ता नहीं दिखाई देती है। शकुन, अजय, डॉ. जोशी सभी आधुनिक एवं उच्च शिक्षित हैं। वे पुरानी रीतियों एवं रूढ़ियों में विश्वास नहीं रखते हैं।

आज मध्यवर्ग शिक्षित बन गया है। वह रीति-रिवाजों का विरोध कर रहा है लेकिन आज भी इस वर्ग में कुछ रीतियाँ तथा रूढ़ियाँ हमें दिखाई देती हैं जिसके फलस्वरूप यह समाज हमें दोहरी जिंदगी जीता दिखाई दे रहा है जो कश्मकश से भरी हुई है। सभी विवेच्य उपन्यासों में पुराने रीति-रिवाजों एवं रूढ़ियों के प्रति विरोध की एवं विद्रोह की भावना दिखाई देती है।

4.1.6 आर्थिक स्थिति -

किसी भी समाज का विकास उसके आर्थिक स्तर पर निर्भर करता है। अर्थ व्यवस्था का प्रभाव सामान्य जनों पर पड़ता ही है। परिवार, समाज, राजनीति, धर्म, साहित्य, कला का विकास अर्थ पर ही आधारित है। अर्थ वह शक्ति है जो पूरे समाज के सूत्रों को थामे हुए है। अर्थ व्यवस्था में परिवर्तन आने पर पूरे सामाजिक स्तर में परिवर्तन आता है।

आज समाज में उच्चवर्ग के पास तो भौतिक स्तर संबंधी कोई समस्याएँ नहीं हैं। पूँजी के आधार पर वह सारी समस्याओं का हल ढूँढ़ लेने का प्रयास करता है। निम्न वर्ग तो अति नम्न स्तर की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए चिंतातूर होता है। भूख की समस्या उसके लिए सर्वोपरी होती है। आज समाज में मध्यवर्ग को सबसे अधिक संघर्ष करना पड़ता है। अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता की अपूर्ति के होते हुए भी ऊँची-ऊँची महत्त्वकांक्षाएँ यह वर्ग रखता है। परिणामतः संघर्षों से, घूटन से, तनावों एवं निराशा से भरी जिंदगी उसे सहनी पड़ती है। राधा गिरधारी मध्यवर्गीय आर्थिक स्थिति के संदर्भ में लिखती हैं- ''आर्थाभाव के कारण यह वर्ग असंतुष्टि से आक्रांत रहता है और विकसित नहीं हो पाता। छोटे-छोटे सुखों का परिपूर्ति न होने से वह असंतुलित होकर निष्क्रिय और आत्मीय हो गया है, दूषित शिक्षा व्यवस्था के कारण बेकारी से उत्पन्न समस्याओं का भी सामना इस वर्ग को सबसे ज्यादा करना पड़ता है।''[24] इससे स्पष्ट होता

है कि मध्यवर्ग आज भी आर्थिक स्थिति से कमजोर दिखाई देता है। औद्योगिकरण, शिक्षा ने इनके आय में बढ़ती जरूर की है फिर भी इस वर्ग की बढ़ती महत्त्वकांक्षाओं से आय और खर्च का तालमेल असंतुलित हो रहा है। परिणामस्वरूप आर्थिक दृष्टि से संघर्ष करना पड़ रहा है।

'शह और मात' उपन्यास में भी मध्यवर्गीय लेखक उदय, मध्यवर्गीय परिवार की सदस्य सुजाता, जिसके पिता डॉक्टर है, उच्च शिक्षा पानेवाला मुलामसिंह आदि की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है। उदय तो अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शहर आया है। बेरोजगारी ने उसे बेहाल कर दिया है। मकान की समस्या उसके सामने है। उदय के फटीचर हालत के कारण हो उसकी प्रेमिका रश्मि उसे छोड़ देती है। मुलायमसिंह की आर्थिक नाजुक है। 'शह और मात' ने सुजाता की आर्थिक स्थिति कुछ हद तक अच्छी रही है। अपर्णा की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। उसका घर सभी सुविधाओं से भरा हुआ है। पैसों की कमी उसको नहीं है लेकिन फिर भी उसमें हमें अकेलेपन, अलगावबोध, घुटन की पीड़ा दिखाई देती है। राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय उन परिवारों की ओर संकेत किया है जो बाहर से तो हमें सुखी दिखाई देते हैं, वह सिर्फ एक दिखावा है उनका खोखलापन है क्योंकि ये भौतिक सुख तो प्राप्त करते हैं लेकिन मानसिक सुख इनको नहीं मिलता है।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति को रूपायित किया है। मधुसूदन, अरविंद, हरबंस, नीलिमा सभी अर्थाभाव की मार को सहते हैं। मधुसूदन मेरठ से बंबई, दिल्ली तथा लखनऊ में अपनी तथा परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए घूमता है। अर्थाभाव के कारण महानगरों में गंदी बस्ती में रहता है। बेरोजगारी के कारण रोजी-रोटी के लिए भटकता दिखाई देता है। यही हालत उसके दोस्त अरविंद की भी है। हरबंस तथा नीलिमा ऊँची-ऊँची आकांक्षाओं को लेकर जीते हैं लेकिन अर्थाभाव के कारण दुःखी एवं तनावपूर्ण जीवन जीते हैं। नीलिमा के ज्यादा खर्च से तंग आकर हरबंस नीलिमा से कहता है- ''मैं कुछ कर रहा हूँ अपने ही लिए तो कर रहा हूँ! तुम तो सिर्फ घर में रहती हो और अपनी कला की साधना करती हो। तुम्हें इन छोटी-छोटी बातों से क्या मतलब है कि घर में खर्च के लिए पैसा कहाँ से आता है और फिर किस तरह खर्च हो जाता है। तुम्हारे अंदर तो बस एक कला की भूख है और तुम उसके सामने जीवन की और सब आवश्यकताओं को हीन और तुच्छ समझती

हो !''[25] मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' में महानगरीय मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक स्थिति एवं अर्थाभाव से निर्मित समस्याओं का अंकन किया है।

'वे दिन' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग विदेशी मध्यवर्ग है। इसकी आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं है। 'वे दिन' उपन्यास का नायक इंदी को छुट्टियों में पैसों के अभाव के कारण नौकरी करनी पड़ती है। कभी-कभी वह मारिया, गेटकीपर तथा अन्य मित्रों से उधार भी लेता है। मैं के साथ अन्य छात्र जो पढ़ने आए हैं उनकी स्थिति भी यही है। वे भी आर्थिक तनाव के कारण नौकरी के तलाश में हैं- ''शायद ही होस्टल का कोई विदेशी छात्र बचा हो, जो उनका कर्जदार न हो- खासकर क्रिसमस की छुट्टियों में, जब हम गिरजे के चूहों से भी बदतर होते थे।''[26] विदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए गए मध्यवर्गीय छात्रों की स्कॉलरशिप खत्म होने पर आर्थिक दुरावस्था को इंदी के माध्यम से निर्मल वर्मा ने व्यक्त किया है।

'आपका बंटी' उपन्यास में जो मध्यवर्गीय पात्र है उनकी आर्थिक स्थिति व्यवस्थित है। अजय कलकत्ते में डिव्हिजनल मॅनेजर है, शकुन प्रिंसिपल है, जोशी डॉक्टर है। आर्थिक दुरावस्था या अर्थाभाव की समस्या का सामना इन लोगों को नहीं करना पड़ता है। उपन्यास में शकुन, अजय, डॉ. जोशी के आय के संदर्भ में कोई जानकारी नहीं दी है लेकिन उनके रहन-सहन, सुख-सुविधाओं से उनके आर्थिक स्थिति के संदर्भ में हमें पता चलता है।

अतः चारों उपन्यासों में से 'आपका बंटी' के पात्रों को छोड़कर अन्य सभी उपन्यासों के पात्र आर्थिक विवशता को झेलते दिखाई देते हैं। इन उपन्यासों में महानगरीय मध्यवर्गीय समाज में धन की महत्ता तथा अर्थ केंद्रीय जीवन पद्धति को व्याख्यायित किया है। आज मानव का केंद्र धन बन गया है। धन के लिए नैतिकता, मानवता, राष्ट्रीयता, देश प्रेम सबकुछ त्याग करने को मानव उतारू हो गया है। धन के आधार पर ही सभी नाते-रिश्ते दिखाई देते हैं।

4.1.7 शैक्षिक स्थिति -

शिक्षा मानव को साक्षर तो बनाती है, साथ-साथ अपने जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर सुधारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आज पूरे समाज में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है। समाज में मध्यवर्ग के अंतर्गत आनेवाले सभी सदस्य उच्च शिक्षित दिखाई देते हैं। आज मध्यवर्ग केवल शिक्षित नहीं बन रहा तो व्यवसायिक शिक्षा जैसे अभियांत्रिकी,

वैद्यकीय आदि ले रहा है। परिणामस्वरूप मध्यवर्ग अधिक वेतन मिलनेवालों पदों पर कार्य कर रहा है जिससे उनका आर्थिक ढाँचा, रहन-सहन पूरी तरह परिवर्तित होने लगी है।

'शह और मात' में सभी पात्र उच्च शिक्षित हैं। उदय ने साहित्य में उच्च शिक्षा ली है, सुजाता एम्. ए. में पढ़ रही है, मुलायमसिंह बी. कॉम कर रहे हैं, सुजाता के पिता डॉक्टर हैं। शिक्षा ने मध्यवर्गीय जीवन में नई आकांक्षाओं का निर्माण किया है। सुजाता अपने जीवन में खूब नाम कमाना चाहती है। शिक्षा के कारण ही सुजाता अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वह खुद को आर्थिक एवं मानसिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। आज मध्यवर्गीय नारी शिक्षा के कारण उस पर हो रहे अत्याचार एवं अन्यायों का विरोध करने में सफल हो रही है। शिक्षा प्राप्त करके वह प्रत्येक क्षेत्र पुरुषों के साथ कार्य कर रही है। उदय भी अपने शिक्षा के बलबुते पर रुपए कमाने के लिए शहर में आया है। अतः 'शह और मात' में चित्रित सभी पात्र उच्च शिक्षित हैं।

मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में दिल्ली, बंबई जैसे महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय समाज का अंकन है। उपन्यास में हरबंस प्रोफेसर है, मधुसूदन, सुषमा, नीलिमा, शुक्ला, जीवन भार्गव, सुरजीत सभी शिक्षित हैं। कुछ पात्रों के शिक्षा का उल्लेख है तो कुछ पात्रों के रहन-सहन, नौकरी से उसके शिक्षा का पता चलता है। उपन्यास में सभी पात्र शिक्षा के कारण सामाजिक परिवेश के प्रति सजग एवं चेतनापरक दृष्टि रखते दिखाई देते हैं। नीलिमा और सुषमा अपने शिक्षा के बल पर नौकरी करती है, खुद को अन्य पुरुषों के साथ सिद्ध करके आत्मनिर्भर बनना चाहती है। सुषमा तो समाज में शिक्षा के बलबूते पर सम्मान पाना चाहती है तथा आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहती है।

'वे दिन' में भी उपन्यास का नायक 'मैं' (इंदी) स्कॉलरशिप लेकर मेडिकल की पढ़ाई पूरी कर रहा है। टी. टी., फ्रान्ज, मारिया आदि भी अलग-अलग क्षेत्र में शिक्षा ले रहे हैं। 'वे दिन' में विदेशी शहरी मध्यवर्ग का चित्रण होने के कारण सभी जीवन पद्धतियाँ अलग हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन प्रिंसिपल है, अजय डिविजनल मॅनेजर है, जोशी डॉक्टर है, वकील चाचा आदियों के पदों के आधार पर उनके शिक्षा का संकेत मिलता है। शिक्षा के अनुसार सभी का जीवन स्तर हमें उच्च दिखाई देता है।

अतः सभी विवेच्य उपन्यासों में उच्च शिक्षित पात्र दिखाई देते हैं। सभी का रहन-सहन शिक्षा के अनुसार है। उच्च शिक्षा पाकर भी हमें पात्र बेरोजगारी एवं अर्थाभाव की समस्या से पीड़ित दिखाई देते हैं, जैसे- 'शह और मात' का उदय, 'अंधेरे बंद कमरे' का मधुसूदन, हरबंस और 'वे दिन' का इंदी सभी उच्च शिक्षित हैं लेकिन बेरोजगार हैं। सभी नौकरी के लिए भटकते एवं अर्थाभाव के कारण दुःखी एवं संघर्षपूर्ण जीवन बिताते दिखाई देते हैं। आज मध्यवर्ग शिक्षा ले रहा है उसका प्रमुख उद्देश्य है, नौकरी पाना या अपनी बेरोजगारी को खत्म करना। आज वह शिक्षा के प्रतिष्ठा या स्तर को न महत्त्व देकर उसके बाजार के महत्त्व एवं व्यवसायिकरण को महत्त्व दे रहा है। वैसे उनके सामने और कोई चारा भी हमें दिखाई नहीं देता है। शिक्षा लेकर आज मध्यवर्गीय व्यक्ति धन प्राप्त करके प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। आज मध्यवर्गीय व्यक्ति शिक्षा पाने के लिए विदेश में जा रहा है। शिक्षा के लिए वह रुपयों की चिंता नहीं करता है।

4.1.8 अनैतिक संबंध -

शिक्षा के विकास एवं औद्योगिकरण ने मानवी जीवन का विकास तो किया लेकिन मानवी मूल्यों एवं नैतिकता को गिरा दिया है। आज मानव भौतिक दृष्टि से तो संपन्न बनता जा रहा है लेकिन हीन विचारों को अपनाता है। आज समाज के सभी रिश्तें खोखले साबित हो रहे हैं। मध्यवर्गीय समाज तो आज अर्थ की लोलुपता के कारण अधिक गिरा हुआ दिखाई देता है। विरोध एवं विद्रोह के नाम पर मध्यवर्गीय युवक और युवतियाँ हमें गलत रास्ते पर चलते दिखाई देते हैं। मध्यवर्गीय दांपत्य में हर किसी तीसरे व्यक्ति का आगमन दिखाई देता है। मध्यवर्गीय युवतियाँ विवाह से पूर्व अन्य युवकों से शारीरिक संबंध रखने लगी है। सेक्स एवं काम की भावना आज मध्यवर्गीय व्यक्ति में सबसे अधिक दिखाई देती है। मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ फ्री-लव, फ्री-सेक्स की पाश्चात्य संकल्पना का खुले आम स्वीकार कर रहे हैं, जिससे हमारे भारतीय संस्कारों एवं संस्कृति पर असर हो रहा है। इसके संदर्भ में डॉ. वीणा गौतम लिखती हैं- ''मध्यवर्गीय युवक-युवतियों ने 'फ्री-लव' को एक फैशन के रूप में अपना लिया है लेकिन इतना निश्चय है कि 'फ्र लव' के इस सिद्धांत को भारतीय मध्यवर्गीय समाज की परिस्थिति के मुताबिक जीवन में व्यवहारिक रूप देना, अविवाहित रहकर जीवन पर्यंत सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रति विद्रोह करना एक फैशन परस्ती तो हो सकती है, हमारे जीवन की वास्तविकता नहीं।''[27] स्पष्ट है मुक्त यौनाचार

समाज में अनैतिकता को बढ़ावा देता है। भारतीय समाज में नैतिकता को ढोने की जिम्मेदारी मुख्यतः मध्यवर्ग पर ही रही है। अतः इस वर्ग में विवाहेतर काम संबंध अमान्य हैं लेकिन आज मध्यवर्ग में अनैतिक संबंध बढ़ रहे हैं जो आज समाज के सामने समस्या बनकर उभर रहा है।

'शह और मात' उपन्यास में अनैतिक संबंध दिखाई देते हैं। सुजाता के कॉलेज के अध्यापक जो सुजाता के सहेली के साथ अनैतिक संबंध रखता है। कॉलेज के अन्य एक अध्यापक और अध्यापिका का अनैतिक शारीरिक संबंध है। मध्यवर्गीय परिवारों में तो स्त्री-पुरुष की मित्रता को भी स्वीकार नहीं किया जाता है उसे अनैतिक मानते हैं। सुजाता अपने मित्रों को घर नहीं ले जा सकती है क्योंकि परिवार के अन्य सदस्य उसकी हरकत को बुरा एवं बदचलन मानते हैं। आज मध्यवर्ग नैतिकता-अनैतिकता के बारे में सोचता नहीं है वह सिर्फ भोग को महत्त्व दे रहा है। वह अपने भौतिक सुखों के पीछे लगा हुआ है।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में मधुसूदन और सुषमा के अनैतिक संबंधों को स्पष्ट किया है। सुषमा आधुनिक नारी है। वह स्वच्छंदी विचारोंवाली है। वह शारीरिक प्यास मिटाने के लिए लालायित है। वह विवाह से पूर्व मधुसूदन से शारीरिक संबंध रखती है। मधुसूदन उसके साथ शारीरिक संबंध रखकर भी उससे शादी नहीं करता है। आज मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ शारीरिक संबंध रखकर भी शादी करना उचित नहीं समझते हैं। वह शारीरिक भूक को एक जरूरत के रूप में ले रहे हैं। परिणामस्वरूप समाज का नैतिक स्तर दिन-ब-दिन गिरता जा रहा है। सुरजीत भी दो-दो शादियाँ होकर शुक्ला से शारीरिक संबंध रखता है। परिणामस्वरूप शुक्ला को उसके साथ विवाह करना पड़ता है। आज मध्यवर्गीय युवतियों को अनैतिक संबंधों के कारण मानसिक तनाव को तो सहना ही पड़ता है, साथ-साथ समाज में अपमान सहना पड़ता है।

निर्मल वर्मा के साहित्य में मुक्तभोग एवं यौनाचार को प्रमुखता है। निर्मल वर्मा सेक्स को स्वस्थ जीवन में महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसी वजह से उनके उपन्यासों के सभी पात्र मुक्त यौन-संबंध रखते हैं। 'वे दिन' की रायना भी पति से अलग रहती है। पति से रहने के कारण वह यौन तृप्ति टूरिस्टों तथा गाइडों से करवाती है। अपने बेटे मीता को होटल में अकेले छोड़कर सेक्स के प्रति आकर्षण होने के कारण खुद इंदी के कमरे में चली जाती है और अपने सेक्स की तृप्ति करवाती है। रायना इन सभी संबंधों के बीच नैतिकता-अनैतिकता नहीं लाती है। वह प्रेम को

केवल शारीरिक तृप्ति के साधन के रूप में लेती है। रायना कहती है- ''मैं सिर्फ यह चाहती हूँ कि दूसरे को बाद में पछतावा न हो... देन इट इज मिजरी।''[28] मैं तथा होस्टल के अन्य युवक-युवतियों से मारिया और फ्रान्ज विवाह के पूर्व शारीरिक संबंध रखते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि निर्मल वर्मा पात्र यौनाचार को अनैतिक नहीं मानते हैं। यह वहाँ की संस्कृति का परिणाम है।

'आपका बंटी' में शकुन अपने पति अजय से परित्यक्त नारी होने के कारण वह अपने यौन तृप्ति के लिए डॉ. जोशी के प्रति आकर्षित होकर उनके साथ शारीरिक संबंध रखती है लेकिन बाद में उनके साथ विवाह कर लेती है।

अतः विवेच्य उपन्यासों में अनैतिक संबंध एक समस्या के रूप में उभरी है। इन अनैतिक संबंधों का ज्यादातर परिणाम हमें मध्यवर्गीय नारियों पर दिखाई देता है। महानगरों में तो नाते-रिश्तों को ठुकराकर शारीरिक संबंध रखे जा रहे हैं। दिन-ब-दिन यह समस्या भीषण रूप धारण कर रही है।

4.2 सांस्कृतिक पक्ष -

संस्कृति प्रायः उन गुणों का समुदाय है, जो व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाती है। संस्कृति के संदर्भ में नालंदा विशाल शब्दसागर में लिखा है ''किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, अचार-विचार, कला-कौशल्य और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती है- ''उसे 'संस्कृति' कहा जाता है।''[29] विश्व की अन्य संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति अपना अलग एवं विशेष स्थान रखती है। आचार, लोक व्यवहार, जीवनमूल्य, रहन-सहन भारतीय वेशभूषा, उत्सव, विवाह विषयक रीतियाँ आदि बातें भारतीय संस्कृति की पहचान हैं।

आज की भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रही है। अतः इसे हम 'आधुनिक संस्कृति' कहते हैं। पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति से नितांत भिन्न प्रकार की संस्कृति है। भारतीयों को पाश्चात्य संस्कृति का इतना अधिक आकर्षण है कि सामान्य जन-जीवन तथा साहित्यिक परंपरा भी पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने में हिचकिचाती नहीं क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति, जीवन तथा साहित्य भारतीयों की दृष्टि से आधुनिक है। इसे अपनाकर स्वयं को आधुनिक समझने लगते हैं। यही आधुनिक जीवन की आधुनिक संस्कृति है। भारत की आधुनिक

संस्कृति पाश्चात्यों की देन है। पाश्चात्य संस्कृति का सबसे अधिक प्रभाव भारतीय मध्यवर्गीय समाज पर परिलक्षित होता है। आज यह वर्ग बुद्धि और तर्क की कसौटी पर सांस्कृतिक मूल्यों को कसने लगा है। आज मध्यवर्गीय युवक अपनी अतीतजीवी संस्कृति के खोखलेपन को महसूस करके उसका नकार रहा है। सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत हम विवाह विषयक नई रीतियाँ, वेशभूषा, खानपान, मनोरंजन के साधन, होटल संस्कृति, अर्थ प्रधान संस्कृति का उदय आदि बातों का अध्ययन करेंगे।

4.2.1 विवाह की नई रीतियाँ -

मध्यवर्गीय समाज में विवाह संबंधी अनेक रीतियाँ सदियों से चली आई हैं, उनकी आज इस वर्ग का सदस्य पढ़ा-लिखा बनने पर इसे अव्यवहार्य, अप्रासंगिक एवं अवैज्ञानिक बता रहा है। आज उसे विवाह में खाना, गना-बजाना, मध्यस्थ व्यक्ति का होना आदि अमान्य है। इन सबके बावजूद वह स्त्री-पुरुष के बीच एक पवित्र प्रेम एवं समर्पण को महत्त्वपूर्ण मानने लगा है। आज परंपरागत विवाह की अपेक्षा मध्यवर्ग प्रेम-विवाह को महत्त्व देने लगा है। विवाह के रूढ़ अर्थ एवं नियम बदल गए हैं। इस संदर्भ में डॉ. विणा गौतम लिखती हैं- ‘‘आधुनिक जीवन-बोध में विवाह का रूढ़ अर्थ अब मान्य नहीं रहा आज के गतिशील जीवन में विवाह दो आत्माओं का पवित्र संगम, जन्म-जन्मांतर का भावनात्मक संबंध, स्त्री-पुरुष का स्थायी बंधन आदि न रहकर एक समझौता अथवा मैत्री संबंध के रूप में स्वीकृत हो रहा है।’’[30] मध्यवर्ग आज इसी रीति एवं विचारों को अपना रहा है। परिणामतः यह समझौता ज्यादा दिन नहीं सफल होता और दांपत्य टूटने लगता है।

‘शह और मात’ में भी सुजाता को लड़के देखने आना तथा उनके सामने बैठना पसंद नहीं है। वह खुद अपना जीवन साथी चुनना चाहती है लेकिन उसका प्रेमी तेज उसको धोका देता है। सुजाता उदय के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार रखना चाहती है लेकिन उसके रोब एवं अहं को नहीं सह पाती है। वह स्वच्छंदी जीवन जीना चाहती है। इसी वजह से वह विवाह जल्दी नहीं करना चाहती है। उसकी सहेली रेखा भी लड़के के माता-पिता का विरोध दिखाने पर भागकर कोर्ट में शादी करना चाहती है। आज मध्यवर्ग में कोर्ट मॅरेज की संख्या दिनों दिन बढ़ने लगी है इसके

कारण अनेक हैं। साथ-साथ मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ प्रेम-विवाह को बढ़ावा देने लगी हैं। प्रेम-विवाह करने के लिए वह सब कुछ त्याग देने को भी तैयार है।

मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में भी नीलिमा और हरबंस का प्रेम-विवाह हुआ है। नीलिमा ने परिवार के सभी सदस्यों का विरोध कर हरबंस से प्रेम-विवाह किया है। शुक्ला और सुरजीत ने कोर्ट मॅरेज की है। शुक्ला यह विवाह करते समय परिवार के किसी भी सदस्यों का विचार या सहमती नहीं लेती है। वह विवाह के पूर्व ही सुरजीत के साथ घूमती है, उसके साथ शारीरिक संबंध रखती है। आज मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ शादी के पूर्व ही एक-दूसरे से मिलते हैं। शादी के पूर्व ही लड़की लड़के के घर जाती है और लड़का लड़की के। आज विवाह संस्कार को त्यागकर विवाह किए बिना पति-पत्नी जैसा जीवन जीते हैं। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में पात्र विवाह विषयक मान्यताओं पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।

निमर्ल वर्मा का साहित्य भी पाश्चात्य संस्कृति तथा जन जीवन से प्रभावित है। इसी वजह से उनके साहित्य में पाश्चात्य संस्कृति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जो हमारी दृष्टि से आधुनिक जीवन की आधुनिक संस्कृति है। निर्मल वर्मा के उपन्यासों में लोग विवाह को नहीं मानते हैं। 'वे दिन' में भी वही स्थिति है। इस उपन्यास के पात्र बिना विवाह किए पति-पत्नी की तरह रहते हैं और जब मुक्त होना चाहते हैं तब मुक्त हो जाते हैं। उन्हें बंधनयुक्त जीवन पसंद नहीं है। इस संदर्भ में डॉ. रघुनाथ शिरगाँवकर लिखते हैं- ''आज के स्त्री-पुरुष विवाह के बिना एक-दूसरे के साथ यौन-संबंध स्थापित करते हैं, बच्चे पैदा करते हैं तथा अपना घर भी बसाते हैं और जब चाहे अलग हो सकते हैं। ऐसे स्त्री-पुरुषों को समाज धर्म का तथा अन्य किसी का भी बंधन नहीं होता है।''[31] निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास में भी जाक और रायना की यही स्थिति है।

'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन और अजय का प्रेम-विवाह हुआ है। दोनों ने अपनी मर्जी से विवाह किया है लेकिन दोनों का वैवाहिक जीवन टूट जाता है। आधुनिक युग में विवाह की स्थिति के संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण का कथन है- ''वर्तमान जीवन में विवाह आदमी का चरम लक्ष्य नहीं है। परंपरागत विवाह हो या प्रेम-विवाह हो, अगर उससे पति-पत्नी को जीवन रस खोना पड़ा हो या दोनों की दृष्टि से वह अनुकूल न हो वहाँ पर इस विवाह को खत्म कर देना ही उचित होता है।''[32] शकुन और अजय अलग हो जाते हैं। अजय मीरा के साथ पुनर्विवाह करके

घर बसा लेता है। शकुन भी डॉ. जोशी के साथ पुनर्विवाह करती है। शकुन और डॉ. जोशी का पुनर्विवाह आधुनिक पद्धति से हुआ है। वह दोनों 'कोर्ट मॅरेज' करते हैं। बंटी अपनी मम्मी की शादी के संदर्भ में सोचता है- "यों शादी जैसा कुछ भी नहीं हुआ था। न बाजा-गाजा, न हाथी-घोड़ा, न आतिशबाजी।"[33] शादी करके भारतीय संस्कृति में दूल्हन दूल्हे के घर जाती है लेकिन शकुन अपने घर आती है। दो-चार दिनों के बाद डॉ. जोशी के घर जाती है। वहाँ डॉ. जोशी खुद उसका स्वागत करते हैं। आधुनिक रीतियों के अनुसार शादी में ज्यादा लोग नहीं होते हैं लेकिन बाद में बड़ी दावत दी जाती है। आज मध्यवर्ग में विवाह में नई रूढ़ियों के नाम पर दावतें, नृत्य होते हैं।

अतः आलोच्य उपन्यासों में आधुनिक विवाह पद्धतियों का जैसे कोर्ट मॅरेज, प्रेम विवाह आदि का चित्रण है। विवाह में पेंडाल दिखाई नहीं देता, न कोई सांस्कृति एवं धार्मिक विधियाँ। आज मध्यवर्ग एवं उच्चवर्गीय समाज में विवाह एक समझौता बन गया है। विवाह जैसे पवित्र बंधन को आज लोग ठुकराकर मुक्त जीवन जीना चाहते हैं। आज मधय्वर्गीय युवा वर्ग में पुनर्विवाह की प्रथा अधिक दिखाई देती है। आज मध्यवर्ग परंपरागत विवाह संस्कारों की दीवारों को गिराने लगा है।

4.2.2 अर्थ प्रधान संस्कृति का उदय -

आधुनिक काल में शिक्षा, विज्ञान और औद्योगिकरण की प्रगति के कारण मध्यवर्गीय व्यक्ति की सुख-सुविधाएँ बढ़ गई हैं। आज मध्यवर्ग अपनी भौतिक सुविधाओं की पूर्ति के लिए भाग रहा है। मध्यवर्गीय समाज में भोगवादी संस्कृति पनप रही है लेकिन दूसरी ओर उनके पारिवारिक जीवन में अनेक समस्याओं ने प्रवेश किया है, आज उन्हें बेरोजगारी, मानसिक तनाव, दांपत्य विघटन, मूल्य विघटन, अर्थाभाव, अलगावबोध से यह वर्ग सबसे अधिक पीड़ित है। संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं और सभी का अर्थार्जन प्रमुख उद्देश्य बन गया है। आज मध्यवर्गीय परिवारों में प्रमुख वही होता है जो कमाता है। आज नई संस्कृति का उदय हो रहा है। वह अर्थ प्रधान संस्कृति है। आज मानव जीवन का चरम लक्ष्य एवं केंद्र अर्थ बन गया है।

'शह और मात' उपन्यास में भी हमें अर्थ ही केंद्र में दिखाई देता है। उदय अपना गाँव मेरठ छोड़कर बंबई में अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आया है। अर्थाभाव के कारण

उसे कम वेतन की नौकरी करनी पड़ती है, शहर की गंदी गलियों में रहना पड़ता है। यहाँ तक की वह अपना लेखन पैसों के लिए दूसरों के नाम बेच देता है। वह फिल्म की कहानी लिखता तो है लेकिन चोखेलाल उसे पैसे देकर अपने नाम से प्रोड्यूसर को देता है। जब उदय घर में था तब घरवालों की निगाहों में वह घर का बोझ बिघड़ हुआ, निठल्ला और बेकार था और इसी अपमान ने उसे कुछ बनने की प्रेरणा दी। वह बंबई चला आया था। वह अपना इरादा सुजाता से कहता है- ‘‘लौटूँगा तो सफल होकर ही लौटूँगा। ‘लौट के बुद्धु घर को आए’ वाला हिसाब नहीं होगा।’’[34] अपना लक्ष्य और अपनी व्यथा वह सुजाता को बताता है। आज मध्यवर्गीय युवकों ने रुपयों-पैसों को अपना चरम लक्ष्य मान लिया है। आज इस अर्थ प्रधान संस्कृति में अगर कोई युवक रुपए नहीं कमाता तो वह निठ्ठला एवं बोझ समझा जाता है। मध्यवर्गीय व्यक्ति भी रुपयों के अर्जन के लिए सभी हदें पार कर देना पसंद करते हैं।

‘अंधेरे बंद कमरे’ उपन्यास में भी हरबंस, नीलिमा, मधुसूदन, सुरजीत, पॉलिटिकल सेक्रेटरी, मॅनेजर, सुषमा आदि सभी पात्रों का प्रमुख लक्ष्य अर्थार्जन है। हरबंस अर्थार्जन के लिए नौकरी करता है, ज्यादा पैसे कमाना चाहता है, मधुसूदन रुपयों के लिए बंबई, दिल्ली, लखनऊ आदि शहरों में जाता है वही हालत सुरजीत की है। पॉलिटिकल सेक्रेटरी तो सभी ओर से रुपए कमाना चाहता है। सुषमा रुपयों के लिए धनी लोगों एवं उद्योगपतियों का सहचार्य रखती है। उपन्यास में हमें सभी धन और शौहरत के पीछे दौड़ते दिखाई देते हैं। सभी इस धन प्राप्ति की होड़ में एक दूसरे को कुचल देना चाहते हैं। अर्थाभाव के कारण ही नीलिमा और हरबंस के बीच झगड़ा होता है, विदेश में दोनों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मधुसूदन भी इसी ‘अर्थ’ के कारण भटकता है।

‘वे दिन’ के सभी पात्र अर्थ के लिए जूझते दिखाई देते हैं। अर्थ प्राप्ति ही सभी का उद्देश्य है। इंदी अर्थ प्राप्ति के लिए मेडिकल की शिक्षा लेने ऑस्ट्रेलिया में गया है। टूरिस्ट एजन्सी का मालिक, फ्रान्ज, मारिया, टी. टी. सभी अर्थ प्राप्ति के लिए लालची दिखाई देते हैं। युरोपीय देशों में आज अर्थ सर्व प्रमुख बन गया है। अर्थ के सामने भावना, कर्तव्य, प्रेम सब कुछ गौण माना जा रहा है। सभी व्यक्तियों का जीवन अर्थ केंद्रीय बना हुआ है।

'आपका बंटी' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। इस उपन्यास के सभी पात्रों की आर्थिक स्थिति अच्छी है फिर भी वह रुपयों के पीछे दौड़ते दिखाई देते हैं। डॉ. जोशी के पास संपत्ति होकर भी वह शकुन के नौकरी छोड़ने के पक्ष में नहीं हैं। शकुन के नौकरी के रुपयों के प्रति लालची प्रवृत्ति रखते हैं। इसके संदर्भ में शकुन का कथन द्रष्टव्य है- "...क्या डॉक्टर नहीं चाहते कि वह नौकरी छोड़े ? उसका पैसा चाहे न हो, पर क्या उसका पद डॉक्टर के लिए....।"[35] इस कथन से स्पष्ट होता है कि आज मध्यवर्गीय परिवारों में पद और रुपया प्रमुख बना हुआ है। घर में सभी सुविधाएँ होकर भी रुपयों के पीछे दौड़ते दिखाई देते हैं। हो न हो शकुन की नौकरी, उसका घर, उसके रुपयों के प्रति डॉ. जोशी आकर्षित होते हैं। आज मध्यवर्ग इसी अर्थ प्रधान संस्कृति में उलझा हुआ है।

यहाँ स्पष्ट है मध्यवर्गीय समाज अर्थ प्रधान संस्कृति में जीवन यापन करता हुआ दिखाई देता है। इन सभी के लिए रुपए एवं शौहरत प्रमुख बन गई है जिसके लिए वह न नैतिकता या अनैतिकता का विचार करते हैं न पारिवारिक संबंधों तथा रिश्तों का। आज अर्थ प्रधान संस्कृति के कारण मध्यवर्गीय परिवारों की सुख-शांति एवं पारिवारिक रिश्ते मोम की दवीरों की तरह ढह रहे हैं। आज समाज में सिर्फ धनी लोगों को मान सम्मान है। अर्थ प्रधान संस्कृति में स्वाभिमान पूर्ण जिंदगी जीने के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता एक अनिवार्य शर्त हो गई है। आज मध्यवर्गीय व्यक्ति इसी संस्कृति के अधिन होकर सभी कर्तव्य रिश्तों को भूलने लगा है।

4.2.3 वेशभूषा -

मध्यवर्ग अपने पेहराव के प्रति विशेष ध्यान देता है, खासकर के नारियाँ। जब भी वह घर के बाहर निकलती है तब सज-धज कर बाहर निकलती हैं। इस वर्ग की स्त्रियाँ खास करके साड़ी-ब्लाऊज पहनती है। मध्यवर्ग भोगवादिता और आर्थिक सीमाओं के बीच चक्कर काटता है। अच्छी वेशभूषा की महत्त्वाकांक्षा और आर्थिक संकट के बीच यह वर्ग लटका हुआ है।

'शह और मात' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्गीय सदस्यों की वेशभूषा हमें सामान्य दिखाई देती है। सुजाता साड़ी और ब्लाऊज पहनती है, तो कभी-कभी पाजामा और जुड़ेदार। सुजाता घर के बाहर याने उदय से मिलने के लिए जाते समय सज-धज कर जाती है। उदय भी सामान्य कपड़ों में ही हमें दिखाई देता है। वह अपने कपड़ों के प्रति इतना सतर्क नहीं है। उसकी

आर्थिक स्थिति नाजुक होने के कारण फटे हुए कपड़े भी पहनता है। उच्च मध्यवर्गीय नारी अपर्णा अपने कपड़े गहनों का बड़ा ही खयाल रखती है। सुजाता उसके वेशभूषा के संदर्भ में कहती है- "अट्ठाइस-उन्नीस की उम्र, गोल चेहरा, गेहुँआ रंग और भरा हुआ शरीर सुंदर फिगर। आसमानी शेड की कीमती शिफॉन की साड़ी और ब्लाऊज। हाथ में चूड़ियाँ और घड़ी। दोनों हाथों के बीच में लटकता, कपड़ों से ही मैच करता मखमली पाउच।"[36] आज मध्यवर्गीय नारियाँ फॅशन की शिकार हुई दिखाई देती हैं। आज मध्यवर्गीय नारी अपने कपड़े, गहनों तथा साड़ी एवं अन्य कपड़ों की मॅचिंग की ओर ज्यादा ध्यान देती है। आज मध्यवर्गीय वेशभूषा पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक हो रहा है।

मध्यवर्गीय नारियाँ आज अंग-प्रदर्शन याने कम कपड़े पहनकर खुद को आकर्षित दिखाने का प्रयास करती हैं। मध्यवर्गीय युवतियाँ तो आज जीन्स, टी-शर्ट तथा पारदर्शी कपड़ों का इस्तमाल करती हैं। उदय और सुजाता रास्ते से जाते समय एक औरत उनके सामने से गुजरती है, उसकी वेशभूषा इसका प्रतीक है। सुजाता कहती है- "सामने से नाइलोन की एकदम पारदर्शी गुलाबी साड़ी पहने एक महिला चली आ रही थी। साड़ी के पार शॉट ऑर लो-कट ब्लाऊज से झाँकती कमर की चौड़ी पट्टी और खुले कंधे सहसा ही उधर ध्यान खींचे लेते थे। सफेद साटन का पेटीकोट घुटनों से नीचे पिंडलियों तक ही जाकर समाप्त हो गया था। अजब भोंड़ी लग रही थी।"[37] यह भोंडापन आजकल सबसे अधिक मध्यवर्गीय नारियों में दिखाई देता है।

मोहन राकेश ने अपने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्ग के आचार-विचार, रहन-सहन एवं वेशभूषा को चित्रित किया है। उपन्यास में हरबंस, नीलिमा, शुक्ला, सुरजीत तथा सुषमा अपने वेशभूषा के प्रति सावधानी बरतते हैं। सभी ऊँचे ढंग के रहन-सहन को पसंद करते हैं। नीलिमा, शुक्ला साड़ी ब्लाऊज पहनती है। दोनों को घर के बहार जाते समय सजने-सँवरने की आदत है। हरबंस भी कोट, सलवार कुर्ता पहनता है। सुषमा आधुनिक नारी है। वह अपनी वेशभूषा के प्रति अधिक ध्यान देती है। सुषमा के पहनावे के प्रति मधुसूदन तथा अन्य लोग भी आकर्षित हैं। मधुसूदन उसके पहनावे एवं सुंदरता के संबंध में कहता है- "सुषमा अपने सफेद कोट में बहुत अच्छी लग रही थी। उतनी अच्छी वह मुझे पहले कभी नहीं

लगी थी। सोने के छोटे-छोटे गोल टॉप्स उसके लंबे-लंबे साँवले चेहरे पर बहुत खिल रहे थे।''[38] आज मध्यवर्गीय नारियाँ अपने वेशभूषा, केशभूषा तथा अलंकारों के प्रति विशेष ध्यान देती हैं।

'वे दिन' उपन्यास का परिवेश विदेशी होने के कारण वेशभूषा भी वहाँ के संस्कृति के अनुरूप ही है। वहाँ लोग ठंड के कारण गर्म कपड़े पहने जाते हैं। विदेश में नारियाँ कम कपड़े पहनती हैं। वह अपने शरीर को आधा खुला छोड़ देती हैं। रायना टी-शर्ट एवं जिन्स पहनती है। रायना शादी-शुदा होकर भी शरीर पर बहुत ही कम एवं छोटे कपड़े पहनती है। रायना के वेशभूषा के संदर्भ में मैं कहता है- ''काला ब्लाऊज और उससे जुड़ी हुई काली स्कर्ट.... उस पर लंबा सफेद कोट, जिसे मैं ने पहले नहीं देखा था। काले ब्लाऊज पर उसका चेहरा बहुत ही शीतल एवं सफेद लग रहा था।''[39] रायना को सजने सँवरने की आदत नहीं है। इसके अलावा निर्मल वर्मा ने वेशभूषा के संदर्भ में कोई संकेत नहीं दिया है।

'आपका बंटी' उपन्यास में उपन्यास की नायिका शकुन उच्च-मध्यवर्गीय नारी है। वह आधुनिक विचारोंवाली है। वह हररोज कॉलेज जाते समय बन-सँवरकर याने मेकअप कर के जाती है। वह अपेन बालों को कटावाती है। शकुन साड़ी और ब्लाऊज पहनती है। बंटी उसके मेकअप के बारे में सोचता है- ''ममी जब कॉलेज जाने के लिए तैयार होती है, बंटी बड़े कौतुहल से देखता है। जान तो वह आज तक नहीं पाया, पर उसे हमेशा लगता है कि ड्रेसिंग टेबुल की इन रंग-बिरनंगी शीशियों में छोटी-बड़ी डिबियों में जरूर कोई जादू है कि ममी इन सबको लगाने से एकदम बदल जाती है।''[40] आज शकुन जैसी अनेक मध्यवर्गीय नारियाँ फॅशन से आकर्षित हैं। वह अपना बहुत पैसा इस पर खर्च करती हैं। डॉ. जोशी के कपड़े तथा रहन-सहन उच्च स्तर का है। अजय और मीरा की वेशभूषा भी सामान्य दिखाई देती है।

आज मध्यवर्गीय समाज में वेशभूषा के प्रति विशेष स्थान दिया जाता है। खासकर मध्यवर्गीय नारी अपने वेशभूषा के प्रति सजग दिखाई देती है। मध्यवर्गीय नारियों के वेशभूषा पर हमें फॅशन, आधुनिकता एवं पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। आज मध्यवर्गीय नारियाँ कम कपड़े पहनकर अंग प्रदर्शन कर रही हैं। वह समाज को अपनी ओर आकर्षित करना चाहती हैं। फॅशन के नाम पर वह अपना समय तथा पैसा बरबाद करती हैं। अतः मध्यवर्गीय वेशभूषा में काफी परिवर्तन आज हमको देखने को मिलता है।

4.2.4 मनोरंजन के साधन -

मनोरंजन के लिए लोककथा, लोकगीत, धार्मिक ग्रंथों का पठन आदि का महत्त्व रहा है। इससे परिहास के साथ-साथ हमें आनंद एवं उल्लास का लाभ होता है। आजकल इनकी जगह टी. व्ही., रेडिओ, नाटक, सिनेमा ने ली है, इससे मनोरंजन तो होता है लेकिन समूह जीवन टूटता है। आज मनोरंजन के नए साधनों के प्रति मध्यवर्गीय समाज आकर्षित है।

'शह और मात' उपन्यास में मनोरंजन के लिए पात्र सिनेमा हॉल में सिनेमा देखने जाते हैं। साथ-साथ बीच पर तथा गार्डन में घंटों समय बिताते हैं। घर में टी. व्ही. देखते हैं, किताबें पड़ते हैं; जैसे- सुजाता और उदय। अपर्णा अपनी गाडी लेकर घूमने जाती है। सुजाता कॉलेज के नाट्य प्रतियोगिता में हिस्सा लेती है। उदय मुलायमसिंह के साथ सिनेमा देखने जाता है।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में भी मनोरंजन के लिए पात्र टी. वी. देखते हैं, सिनेमा तथा नाटक देखने जाते हैं। बाहर कॉफी हाऊसों, होटलों तथा गार्डन में समय बिताते हैं। शुक्ला, नीलिमा घर में रेकार्ड प्लेयर सुनती है। हरबंस को किताबें पढ़ने का शौक है। सुषमा को घूमने और सिनेमा देखने का। वह मधुसूदन को लेकर सिनेमा देखने बार-बार जाती है। आज मध्यवर्गीय समाज में सभी पुराने मनोरंजन के साधन कालबाह्य होते दिखाई देते हैं। आधुनिक साधनों के आकर्षण के कारण सभी लोग मानसिक तनाव को कम करने हेतु मनोरंजन की ओर आकर्षित हैं।

'वे दिन' उपन्यास में स्केटिंग रिंक, रेकॉर्ड प्लेयर सुनना, उस पर नृत्य करना, पहाड़ी में घूमना, सिनेमा देखना और होटल में बैठकर बियर पीना आदि मनोरंजन के साधन दिखाई देते हैं। रायना और मीता प्राग में बर्फ पर स्केटिंग करने के लिए जाते हैं। 'मैं' और रायना वहाँ रेकॉर्ड प्लेअर सुनने जाते हैं तथा नृत्य भी करते हैं। ऑरकेस्ट्रा देखने जाते हैं। 'मैं' और रायना' पहाड़ों में घूमते हैं, होटल में बैठकर घंटों शराब पीते हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास में भी आधुनिक पद्धतियों एवं साधनों का मनोरंजन के लिए प्रयोग किया जाता है। उपन्यास के पात्र सिनेमा, टी. व्ही. तथा महानगरों में, गार्डन में तथा नैसर्गिक स्थलों पर जाने के लिए लालायित दिखाई देते हैं। शकुन डॉ. जोशी के साथ सिनेमा देखने तथा बाहर घूमने जाती है। बंटी अपने पिता अजय के साथ कलकत्ते शहर की सैर करता है। बंटी

कॅरम, व्हिडिओ गेम, व्यू-मास्टर आदि खेल खेलता है। इसके संदर्भ में वकील चाचा बंटी से पूछते हैं- ''खेल कौन-कौन से खेलते हो ? 'ताश, लूडो, कैरम...' 'क्या कहा ताश, लूडो, कैरम-धत्त तेरे की। यह भी कोई खेल हुए लड़कियों के। क्रिकेट खेलो, हॉकी खेलो, कबड्डी खेलो, लड़केवाले खेल खेलो। घर से बाहर निकलकर भागने-दौड़नेवाले।''[40] स्पष्ट है आज आधुनिक युग में कबड्डी, गुल्ली डंडा, झाँझ, चौसर खेल नष्ट हो रहे हैं। उनकी जगह क्रिकेट, कैरम, हॉकी, फूटबॉल ने ली है। इससे भी आगे आज शहर में छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक घर के बाहर नहीं निकलते हैं। इससे उनके शारीरिक स्वास्थ्य की तो हानि हो रही है लेकिन सामूहिक जीवन पद्धति, निर्णय क्षमता, परिश्रम का अभाव भी आज के युवकों तथा बच्चों में दिखाई देता है।

अतः सभी उपन्यासों में मनोरंजन के नाम पर सिनेमा, नाटक, टी. व्ही. कैंप, उद्यानों में घूमना ही रह गया है। हमारे परंपरागत मनोरंजन के साधन और खेल आज नष्ट हो होने के कगार पर हैं। मध्यवर्गीय समाज के पास इस दौड़ धूप की जिंदगी में मनोरंजन के लिए समय ही नहीं है, यही सच्चाई है।

4.2.5 होटल संस्कृति -

आज मध्यवर्गीय समाज में परिवार के प्रति अस्था कम हो गई है। वह होटल, पब, रेस्तराँ, डान्सबार, कॉफी हाऊसों के प्रति अधिक आकर्षित हो रहा है। महानगरीय मध्यवर्ग तथा उच्च वर्ग में होटल खाना-खाना, शराब पीना, संगीत सुनना, लड़कियों का नाच देखना तथा खुद नाचना एक आदत-सी बन गई है। आज लोग होटलों में रातों-रात लाखो रुपये खर्च कर देते हैं। होटल उनके समान, संस्कृति एवं फॅशन का हिस्सा बना है।

''शह और मात' में इस संस्कृति का प्रभाव अधिक नहीं दिखाई देता है। सुजाता और उदय समय बिताने और चाय पीने के लिए कभी-कभी होटल में जाते हैं। उदय अविवाहित होने के कारण भी वह खाना होटल में ही खाता है। उदय जब भी सुजाता को मिलता तब उसे होटल में ले जाता है। आज मध्यवर्गीय व्यक्तियों तथा युवक-युवतियों का मिलने का स्थान होटल ही है। महानगरों में तों आज युवक-युवतियाँ से होटल भरे दिखाई देते हैं। उदय सुजाता से कहता है- ''बंबई में रहनेवालों को तो होटल के बाद दूसरी जगह मरघट ही है।'' 'शह और मात' में

होटल संस्कृति के प्रति ज्यादा आकर्षण नहीं दिखाई देता, इसका मूल कारण है- मध्यवर्ग की नाजुक आर्थिक स्थिति। महानगरीय जीवन में बेरोजगारी, मकान एवं रोजी-रोटी की समस्या में उदय जैसे युवक संघर्ष कर रहे हैं। उन्हें होटल तथा पबों में खर्च करने, समय बिताने के लिए रुपए कहाँ हैं।

आज दिल्ली तथा बंबई जैसे महानगरों में होटल संस्कृति दिखाई देती है। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास का परिवेश दिल्ली, लखनऊ, बंबई का है। उपन्यास में नीलिमा, शुक्ला, हरबंस, सुरजीत, शिवमोहन, जीवन भार्गव मधुसूदन आदि पात्र हमें घर से ज्यादा होटल में दिखाई देते हैं। नीलिमा तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों का होटल में जाना खाना खाना, कॉफी हाऊसों में घंटों बैठना, एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। होटलों तथा घर में बड़ी-बड़ी पार्टियाँ की जाती हैं। इसमें शराब तथा नृत्य का भी सहयोग रहता है।

'वे दिन' का पूरा वातावरण होटल, पब तथा रेस्तराँ से भरा हुआ है। रायना, इंदी, फ्रान्ज, मारिया सभी अपना खाली समय होटलों में बैठकर घंटों शराब पीते बिताते हैं। रायना तो अनेक शहरों में घूमती है और होटल में रहती है; जैसे- लगता है होटल ही उसका घर हो। डॉ. रघुनाथ शिरगावकर लिखते हैं- ''निर्मल वर्मा के पात्र यहाँ आकर चैन की सास लेते हैं। छोटे-बड़े, युवा-वृद्‌ध, स्त्री-पुरुष, लड़के लड़कियाँ सभी अपने जीवन की सार्थकता यही पब के नशीले तथा उत्तेजित परिवेश में आकर ही मानते हैं।''[42] 'वे दिन' उपन्यास का इंदी हमेशा अपने मित्रों तथा नई-नई प्रेमिकाओं को लेकर पब में जाकर शराब पीकर देर तक बातचीत करते हुए बैठता है। कभी-कभी अकेला जाकर शराब पीकर अपना गम भूल जाता है। आज विदेशों में तो होटल संस्कृति पूरे चरम विकास के स्थिति में है। नृत्य तथा सगीत के लिए होटल भरे हुए होते हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास में होटल संस्कृति की विशेषताएँ दिखाई देती हैं। शकुन और जोशी का विवाह होटल में संपन्न होता है। शकुन अपनी सहयोगी अध्यापिकाओं को लेकर घर में तथा घर के बाहर पार्टियाँ मनाती है।

अतः आज होटल संस्कृति के कारण मध्यवर्गीय युवक-युवतियों का परिवार संस्था से विश्वास कम होता दिखाई देता है। मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ इस होटल संस्कृति के कारण

समय, पैसा, अपना मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य बरबाद करते हैं। इस होटल संस्कृति के कारण मध्यवर्गीय समाज दिशाहीन हो रहा है। इसे समय पर रोकना अनिवार्य है।

4.2.6 ईश्वर में अनास्था -

आज मध्यवर्ग के यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण यह वर्ग, आत्मा, ईश्वर, संस्कार, धर्म, मूर्तीपूजा आदि बातों को ढकोसला समझता है। मध्यवर्गीय समाज उच्च शिक्षित होने के कारण रूढ़ि, अंधश्रद्धा, परंपराओं को नकार रहा है। इन लोगों में धार्मिक स्थलों के प्रति अनास्था दिखाई देती है। ऐसे तो आज के युग में धार्मिक स्थलों में भी अब दया, प्रेम सहानुभूति का अभाव दिखाई देने लगा है। इन स्थलों में भी अत्याचार, बेरहमी एवं दुराचार बढ़ता जा रहा है जिसे देखकर आज मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ अनास्थावादी बनते जा रहे हैं। जो मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ भगवान में अस्था रखते सिर्फ यश प्राप्ति के लिए।

'शह और मात' में भी कुछ जगह ईश्वर में अनास्था तो कुछ जगह अस्था दिखाई देती है। उदय ईश्वर के प्रति अनास्थावादी दृष्टिकोण रखता है। उसके अनुवाद आज महानगरीय परिवेश में संघर्ष तो खुद को ही करना पड़ता, समस्याओं का सामना तो खुद को ही करना है, ईश्वर कुछ मदद नहीं करता है। सुजाता का नाटक में अभिनय सफलता के लिए कहती है- ''अगर सब सँभल जाए तो महालक्ष्मी पर जाकर सवा रुपए का प्रसाद चढ़ाऊँगी...। किसी धार्मिक भावना से नहीं, यों ही संकल्प के लिए। इन चीजों का चाहे धार्मिक महत्त्व न हो, तब भी ये सब मन को मजबूत करने में बहुत मदद देती है।''[43] उक्त कथन मध्यवर्ग की ईश्वर के प्रति खोखली एवं स्वार्थी आस्था को व्यक्त करता है।

मोहन राकेश के उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' में पात्र आधुनिक महानगरीय जीवन बितानेवाले हैं। महानगर की इस गतिमानता एवं यांत्रिकीकरण ने उनमें व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को दृढ़ता प्रधान की है। उपन्यास में बंबई, दिल्ली जैसे महानगरीय मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण है। उपन्यास में नीलिमा, हरबंस, शुक्ला, सुषमा, मधुसूदन, सुरजीत तथा अन्य पात्र कहीं भी हमें ईश्वर की साधना या पूजा करते दिखाई नहीं देते हैं। वे ईश्वर, आत्मा, पूजा आदि सब को खोखला मानते हैं।

आधुनिक जीवन जीने के कारण ईश्वर, प्रार्थना, पूजा-पाठ आदि को निर्मल वर्मा के पात्र बिल्कुल नहीं मानते। इन सब के लिए उनके पास समय ही नहीं है। उनके पात्र अनास्थावादी है। 'वे दिन' में क्रिसमस का त्यौहार मनाते हैं लेकिन ईश्वर की पूजा, प्रार्थना करते हुए एक भी पात्र हमें दिखाई नहीं देता है। सभी पात्र अपने अस्तित्व को लेकर संघर्ष करते दिखाई देते हैं। वे व्यक्तिगत स्वतंत्र्य एवं छोटे-छोटे सुखों को छोड़कर न ईश्वर को मानते, न अन्य किसी चीज को।

'आपका बंटी' में मन्नू भंडारी ने ईश्वर, पूजा, व्रत तथा भक्ति के विषय में कोई संकेत नहीं दिया है। 'आपका बंटी' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण होने के कारण पात्रों में कहीं भी आस्थावादी विचार नहीं दिखाई देता है। सभी पात्र व्यक्तिवादी दृष्टिकोण लेकर जीते दिखाई देते हैं।

अतः आज मध्यवर्गीय समाज में ईश्वर, भक्ति पूजा आदि के प्रति अनास्था दिखाई देती है। आज कर्म सिद्धि और यश प्राप्ति के लिए ईश्वर की आराधना की जाती है। आज समाज में आत्मशुद्धि की जगह फिर से मर्तीपूजा का महत्त्व बढ़ने लगा है। शिक्षा के विकास तथा आधुनिकीकरण के कारण मध्यवर्गीय समाज अस्तित्ववादी बन गया है। वह अर्थ को छोड़कर ईश्वर, भक्ति-पूजा सभी को गौण मानता है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत अध्याय में मध्यवर्गीय जीवन के सामाजिक जीवन एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। आज मध्यवर्गीय समाज में विवाह संस्था से विश्वास कम होता दिखाई देता है। यह वर्ग आज भी रूढ़ि-परंपराओं का बोझ अपने कंधों पर ढोने को मजबूर दिखाई देता है लेकिन शिक्षा एवं विज्ञान के विकास से रूढ़ि-परंपराओं की सख्त दीवारें कमजोर होती दिखाई देती हैं। मध्यवर्गीय समाज में संयुक्त परिवार टूट गए हैं और समाज में एकल परिवारों की संख्या बढ़ गई है। आज मध्यवर्गीय व्यक्ति व्यक्तिवादी दृष्टिकोण लेकर समाज की ओर देखता है। मध्यवर्गीय नारियाँ शिक्षित बन गई हैं। वे अन्याय, अत्याचार एवं रूढ़ि-परंपराओं का विरोध कर रही हैं। आज नारियाँ स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर जीवन बीता रही हैं। वह खुद को आर्थिक और मानसिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना रही हैं। मध्यवर्ग अपनी इज्जत एवं स्वाभिमान की रक्षा करता है। जाति-

पाति के बंधन इस वर्ग में शीथिल होने लगे हैं। मध्यवर्ग आज उँची-उँची अकांक्षाएँ खासकर मध्यवर्गीय युवक-युवतियाँ लेकर जीते हैं लेकिन इन अकांक्षाओं की पूर्ति न होने पर घुटनभरी, निराशा से युक्त जीवन बिताने के लिए मजबूर होते दिखाई देते हैं।

मध्यवर्गीय सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन करने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि मध्यवर्गीय समाज में 'स्व' को अधिक महत्त्व मिला है। मध्यवर्ग आज विवाह को एक समझौते के रूप में ले रहा है। आज मध्यवर्ग में प्रेमविवाह तथा आंतर्जातीय विवाह की संख्या बढ़ गई है। मध्यवर्गीय व्यक्ति पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भोगवादी बनता जा रहा है। इस वर्ग के सांस्कृतिक दृष्टिकोण में आचार-विचार, रहन-सहन, पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देता है। शिक्षा एवं विज्ञान के विकास और पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति मध्यवर्ग की आस्था डगमगाने लगी है। मध्यवर्ग आज परंपराओं को नकारकर आधुनिक बन रहा है। यह वर्ग आज घर की अपेक्षा, पब, हॉटेल, रेस्तराँ में समय बिताना सुखदायी मानता है। मध्यवर्ग में आज नैतिक मूल्यों की अपेक्षा अर्थ प्रमुख बन गया है फलस्वरूप अर्थ प्रधान संस्कृति का उदय हो गया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. वीणा गौतम - आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना, पृ. 103
2. राजेंद यादव - शह और मात, पृ. 126
3. डॉ. हेमराज निर्मम - हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग, पृ. 146
4. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 135
5. वही, पृ. 282
6. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 187
7. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 33
8. डॉ. हेमराज निर्मम - हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग, पृ. 153
9. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्ग, पृ. 93
10. डॉ. पारूकांत देसाई - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास, पृ. 143
11. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 310
12. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 35
13. डॉ. राधा गिरधारी - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ. 97
14. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ.
15. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 282
16. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 241
17. मन्नू भंडारी - आपा बंटी, पृ. 5
18. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 122
19. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 47
20. डॉ. राधा गिरधारी - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ. 102-103
21. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 129
22. डॉ. राधा गिरधारी - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ. 92
23. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 161

24. डॉ. राधा गिरधारी - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ. 87
25. मोहन राकेश - अधेरे बंद कमरे, पृ. 257
26. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 25
27. डॉ. वीणा गौतम - आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना, पृ. 95
28. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 240
29. श्रीनवलजी - नालंदा विशाल शब्दकोश, पृ. 1388
30. वीणा गौतम - आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना, पृ. 78
31. डॉ. रघुनाथ शिरगाँवकर - निर्मल वर्मा का कथा साहित्य, पृ. 97
32. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन'', पृ. 174
33. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 111
34. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 60
35. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 105
36. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 92
37. वही, पृ. 120
38. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 273
39. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 200
40. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 7
41. वही, पृ. 47
42. डॉ. रघुनाथ शिरगाँवकर - निर्मल वर्मा का कथा-साहित्य, पृ. 101
43. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 48